



सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 232]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जुलाई 3, 2009/आषाढ़ 12, 1931

No. 232]

NEW DELHI, FRIDAY, JULY 3, 2009/ASADHA 12, 1931

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 3 जुलाई, 2009

अंतिम जाँच परिणाम

विषय : चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित टाइटेनियम डाइऑक्साइड के आयातों से संबंधित पाटनरोधी निर्णायक समीक्षा जांच ।

सं. 15/5/2008-डीजीएडी.—1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर शुल्क अथवा अतिरिक्त शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए:

क. मामले की पृष्ठभूमि

जबकि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर शुल्क अथवा अतिरिक्त शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए दिनांक 16 जनवरी, 2003 की अधिसूचना सं. 14/51/2002-डीजीएडी द्वारा मूल जांच शुरू की थी। प्राधिकारी ने 15 मार्च, 2004 की अधिसूचना सं. 14/51/2002-डीजीएडी द्वारा अपने अंतिम जांच परिणाम जारी किए थे जिसमें चीन जन.गण. (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित टाइटेनियम डाइऑक्साइड के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की गई थी और भारत सरकार द्वारा दिनांक 9-4-2004 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 54/2004 द्वारा निश्चयात्मक शुल्क लगाया गया था ।

2. निर्दिष्ट प्राधिकारी को उक्त अधिनियम की धारा 9(5) के अनुसार मै. ट्रावनकोर टाइटेनियम प्रोडक्ट्स लि. से एक विधिवत् रूप से साक्ष्यांकित आवेदन प्राप्त हुआ था जिसमें संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क को लागू किए जाने की समीक्षा करने और उसे जारी रखने का अनुरोध किया गया है क्योंकि संबद्ध देशों द्वारा पाटन के कारण घरेलू उद्योग को क्षति होना जारी है। यह अनुरोध इन आधारों पर आधारित है कि ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने और घरेलू उद्योग को क्षति होने की आशंका है। याचिकाकर्ता ने इस संबंध में प्रथम दृष्टया साक्ष्य के साथ यह दावा किया था और संबद्ध देश संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने का अनुरोध किया था ।

3. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सकारात्मक साक्ष्य के आधार पर समीक्षा की जरूरत को सही मानने पर संतुष्ट होने के बाद निर्दिष्ट प्राधिकारी ने भारत के राजपत्र, असाधारण में दिनांक 5 जुलाई, 2008 को प्रकाशित एक सार्वजनिक सूचना सं. 15/5/2008-डीजीएडी जारी की थी जिसमें लागू शुल्कों को लागू रखने की जरूरत की समीक्षा करने के लिए पाटनरोधी जांच की निर्णायक समीक्षा की शुरुआत की गई थी और इस बात की जांच की शुरुआत की गई थी क्या शुल्क के समाप्त होने से पाटन और क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की आशंका है।

ख. प्रक्रिया

4. इस जांच में निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया गया है :

- (i) संबंधित नियम 5 के उप नियम (5) के अनुसार प्राधिकारी ने भारत स्थित चीन जन.गण. के दूतावास/प्रतिनिधियों को जांच की शुरुआत से पहले याचिकाकर्ता द्वारा किए गए आवेदन की प्राप्ति के बारे में सूचित किया था।
- (ii) नियम 6(2) के अनुसार नई दिल्ली में स्थित संबद्ध देश के दूतावास/प्रतिनिधियों को जांच की शुरुआत के बारे में सूचित किया गया था।
- (iii) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 5 जुलाई, 2008 की जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां भारत स्थित संबद्ध देश के दूतावास/प्रतिनिधियों, संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों, ज्ञात आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों तथा घरेलू उद्योग को अपने पास उपलब्ध सूचना के अनुसार दिनांक 5 जुलाई, 2008 की जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां भेजी थीं। इस जांच के पक्षकारों से प्रश्नावली का उत्तर देने और निर्धारित समयावधि के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया गया था। इस पत्र, याचिका और निर्यातक को भेजी गई प्रश्नावली की प्रतियां संबद्ध देश के दूतावास को भेजी गई थीं, इसी के साथ उन्हें ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची भी भेजी गई थी और यह अनुरोध किया गया था कि वे संबद्ध देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समयावधि के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह दें।
- (iv) घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत याचिका के अगोपनीय अंश की प्रति संबंधित नियम 6(3) के अनुसार ज्ञात निर्यातकों और संबद्ध देश के दूतावास को उपलब्ध कराई गई थी।
- (v) नियम 6(4) के अनुसार संगत सूचना मंगाने के लिए संबद्ध देश के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं :
 1. मै. गुआंगजी दहुआ केमिकल फैक्टरी, चीन
 2. मै. गुआंग जी जिंग मेई जियांग टाइटेनियम डायोआक्साइड कं. लि., चीन;
 3. मै. गुआंग कांग वू टाइटेनियम मैन्यूफैक्चरिंग कं. लि, चीन;
 4. मै. शाउगन केमिकल प्लांट, चीन;

5. मानशान गोल्डस्टार केमिकल (ग्रुप)
6. जियाओजुओ सिटी केमिकल जनरल प्लांट
7. जुझोऊ केमिकल ग्रुप कं. लि.
8. पिंगुयी मिनरल ब्यूरो
9. टाइटेनियम व्हाइट प्लांट पिंगुयी फेइदेई कार्पो.
10. चोंगक्यूइंग जिनहुआ केमिकल एनर्जी
11. इयानगेक्सी गांगडोंग केमिकल कं. लि.
12. शाओगम सिटी केमिकल प्लांट
13. बेसिज सिटी हुआहोंग टाइटेनियम व्हाइट प्लांट
14. टाइटेनियम इंडस्ट्री कं. ऑफ पेनझीहुआ आयरन
15. टाइटेनियम व्हाइट ब्रांच ऑफ शंघाई
16. एनहुई गूशेंग इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कं. लि.
17. एनहुई हुईशेंग इंटरनेशनल कं. लि.
18. जियांगशू होंगयुआन फार्माच्यूटीकल कं लि.
19. चोंगक्यूइंग जिनहुआ केमिकल एनर्जी फैक्ट्री

(vi) केवल एक निर्यातक अर्थात् मै. कांगवू सुनफेंग टाइटेनियम डाई ऑक्साइड कं. लि., कांगू गुआंगशी, चीन ने निर्धारित समयावधिक के चार महीने बाद अपना उत्तर प्रस्तुत किया है जिसे अस्वीकार कर दिया गया था क्योंकि इसमें निर्यातक प्रश्नावली में यथापेक्षित कोई भी सूचना प्रस्तुत नहीं की गई थी। उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में किसी अन्य निर्यातक ने कोई उत्तर नहीं दिया है।

(vii) भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों और उपभोक्ताओं को नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए प्रश्नावली भेजी गई थी :

1. केमी केयर
2. क्रिस्टल इंडिया
3. पोपावला एंड कं.
4. कांतीलाल संघवी एंड कं.
5. एसोसिएटेड इंडस्ट्रीज
6. चित्ताल केमिकल लिमिटेड
7. गुडलेस नेरोलेक पेंट्स

8. केमी इंटरप्राइजेज/मुलेटिक एंड कं.
9. जी.सी. इंटरनेशनल
10. प्योर केमिकल कं/पोनप्योर कैम (प्रा.) लि.
11. के.पी.एल. इंटरनेशनल लिमिटेड
12. अमृत कैम.
13. कैमटिक इंटरप्राइजेज
14. स्नोसेम इंडिया लि.

मै. कन्साई नेरोलेक पेन्ट्स लि. और मै. बर्जर पेंट्स इंडिया लि. ने उनके द्वारा किए गए आयातों से संबंधित सूचना प्रस्तुत की है जिस पर विचार किया गया है । किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार द्वारा कोई उत्तर नहीं दिया गया है ।

- (viii) घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त आईबीआईएस आंकड़ों के अलावा, जांच अवधि और उससे पूर्ववर्ती तीन वर्षों के लिए आयातों के सौदावार आंकड़े वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से मंगाए गए थे । विचाराधीन उत्पाद टाइटेनियम डाई ऑक्साइड अनाटेज किस्म को अध्याय 28 के उप शीर्ष 28230010 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है । मूल जांच में यह साबित हुआ है कि अध्याय 32 के अंतर्गत भी भारी मात्रा में आयात किए गए हैं । प्राधिकारी ने पूर्ववर्ती जांचों में अध्याय-28 और अध्याय 32 के अंतर्गत किए गए आयातों पर विचार किया है । घरेलू उद्योग के पास उपलब्ध आयात संबंधी आंकड़े अध्याय 32 के अंतर्गत आयातों का जारी रहना दर्शाते हैं । डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रदत्त सूचना में चीन और अन्य देशों से अनाटेज ग्रेड और रियोटाइल ग्रेड के आयात दिए गए हैं । चूंकि विचाराधीन उत्पाद अनाटेज है, इसलिए जांच के प्रयोजनार्थ केवल अनाटेज ग्रेड के आयातों पर विचार किया गया है । इस जांच के प्रयोजनार्थ डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रदत्त आंकड़ों पर विश्वास किया गया है ।
- (ix) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश को हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु एक सार्वजनिक फाइल के रूप में खुला रखा था ।
- (x) घरेलू उद्योग होने के नाते मै. द्रावनकोर टाइटेनियम प्रोडक्ट्स लि. ने सूचना/आंकड़े प्रस्तुत किए थे । प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का सत्यापन उठाई गई क्षति की जांच करने, उत्पादन की इष्टतम लागत ज्ञात करने, भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत ज्ञात करने के लिए सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर किया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा । यह नोट किया गया कि कंपनी ने वर्ष 2007-08 के लिए अपने लेखाओं की सांविधिक लेखा परीक्षा को अभी पूरा नहीं किया है । तथापि, कंपनी ने अपने सभी सांविधिक लेखा खाते रखे हैं । चूंकि विश्वास की गई सूचना लेखा खातों से ली गई है, इसलिए प्राधिकारी ने कंपनी द्वारा रखी गई लेखा पुस्तकों से सत्यापित सूचना को अपनाया है । प्राधिकारी ने समर्थक कंपनी अर्थात् मै. किलबर्न कैमिकल्स के निष्पादन के संबंध में विरोधी हितबद्ध पक्षकार द्वारा प्रदत्त सूचना पर भरोसा किया है ।

- (xi) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों को मौखिक रूप से सुनने के लिए 5-6-2009 को एक सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की थी जिसमें हितबद्ध पक्षकारों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों/प्रत्युत्तरों में दिए गए तर्कों पर, जहां वे इस जांच से संगत थे, विचार किया गया है।;
- (xii) यह जांच 1.04.2007 से शुरू होकर 31.3.2008 (जांच अवधि) के दौरान की गई थी और क्षति संबंधी विश्लेषण 2004-05, 2005-06 और 2006-07 की अवधि के लिए किया गया है।
- (xiii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त विचारों और किए गए अनुरोधों पर उनके वर्तमान जांच से संगत होने की सीमा तक विचार किया है।
- (xiv) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश को हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु एक सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखा था।
- (xv) पाटनरोधी नियमावली के नियम 16 के अनुसार प्राधिकारी ने दिनांक 19 जून, 2009 को एक विस्तृत प्रकटन विवरण जारी किया था, जिन्हें विचाराधीन आवश्यक तथ्य और उन पर व्यक्त विचारों को विधिवत ढंग से वर्तमान अंतिम जांच परिणामों में शामिल किया गया है।
- (xvi) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना की गोपनीयता के दावे के संबंध में उनकी पर्याप्तता के लिए जांच की गई थी। दावे से संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने उन्हें जहां आवश्यक हो, गोपनीयता प्रदान की है और ऐसी सूचना को गोपनीय माना है तथा उसे अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट नहीं किया गया है। जहां कहीं भी संभव था, गोपनीय आधार पर सूचना प्रस्तुत करने वाले पक्षकारों को गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय अंश उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया था।
- (xvii) जहां कहीं भी किसी हितबद्ध पक्षकार ने सूचना देने से मना किया या वर्तमान जांच की प्रक्रिया के दौरान आवश्यक सूचना अन्यथा उपलब्ध नहीं कराई या जांच में अत्यधिक बाधा डाली है, वहां प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपने जांच परिणाम रिकॉर्ड किए हैं।
- (xviii) इस अधिसूचना में *** चिन्ह हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई और नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा गोपनीय मानी गई सूचना को दर्शाता है।

4.1 आयातकों द्वारा प्रकटन विवरण संबंधी टिप्पणियां

- (i) डीजीएडी द्वारा रखी गई सार्वजनिक फाइल से डीजीसीआईएंडएस के आंकड़े स्पष्ट रूप से अनुपस्थित हैं।
- (ii) वर्ष 2007-08 की वार्षिक रिपोर्ट नहीं दी गई है। हमें यह सूचित किया गया है कि वर्ष 2007-08 की वार्षिक रिपोर्ट की लेखा परीक्षा अभी नहीं हुई है।

4.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

प्राधिकारी नोट करते हैं कि डीजीसीआईएंडएस के आयात आंकड़ों ने आयातकों के नाम/गुणवत्ता/कीमतों आदि के बारे में संवेदनशील सूचना दी गई है। इसलिए इसे सार्वजनिक फाइल में नहीं रखा गया है। इसके अलावा, प्राधिकारी नोट करते हैं कि

प्रकटन विवरण में इस बात की पुष्टि की गई है कि कंपनी ने अभी तक वर्ष 2007-08 के लिए अपने लेखाओं की सांविधिक लेखा परीक्षा पूरी नहीं की है।

ग. विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु

5. मूल जांच में शामिल उत्पाद टाइटेनियम डाईऑक्साइड अनाटेज ग्रेड (जिसे संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) था। मूल जांच में इस उत्पाद को निम्नानुसार परिभाषित किया गया था:

"वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद टाइटेनियम डाई ऑक्साइड अनाटेज ग्रेड है जिसका रासायनिक फार्मूला TiO_2 है। टाइटेनियम डाई ऑक्साइड का प्रयोग अनाटेज रूप या रियूटाइल रूप में किया जा सकता है। तथापि, वर्तमान जांच केवल टाइटेनियम ऑक्साइड के अनाटेज रूप के विरुद्ध है। टाइटेनियम डाई ऑक्साइड (TiO_2) सामान्यतः ऑक्साइड रूप में होता है। संबद्ध वस्तु की विशेषताएं रिफ्रेक्ट्री सूचकांक, विशिष्ट गुरुत्व, कठोरता, क्रिस्टल संरचना, तेल शोषण, रंग, छिपाने की शक्ति, पराबैगनी प्रकाश का अवशोषण, चॉकिंग के प्रतिरोध आदि के रूप में बताई जाती हैं। यह एक रंजक है और इसका उपयोग प्राथमिक रूप से पेंट, प्लास्टिक, कागज, स्याही, रबड़ आदि के विनिर्माण में किया जाता है। टाइटेनियम डाई ऑक्साइड (अनाटेज) में काफी अधिक सफेदी होती है। इसकी रंजक शक्ति और छिपाने की क्षमता किसी अन्य सफेद रंजक से अधिक होती है और इसमें प्रकाश और ताप के विरुद्ध स्थिरता और टिकाऊपन भी होता है। यह विषैला नहीं होता है।"

6. विचाराधीन उत्पाद टाइटेनियम डाई ऑक्साइड अनाटेज किस्म को अध्याय-28 के उपशीर्ष सं. 28230010 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। मूल जांच में यह साबित हुआ है कि अध्याय 32 के अंतर्गत भी काफी मात्रा में आयात किए गए हैं। प्राधिकारी ने पूर्ववर्ती जांच में अध्याय 28 और अध्याय 32 के अंतर्गत आयातों पर विचार किया था। घरेलू उद्योग के पास उपलब्ध आयात संबंधी आंकड़े अध्याय 32 के अंतर्गत आयातों का जारी रहना दर्शाते हैं। इसके मदेनजर प्राधिकारी से डीजीसीआईएंडएस द्वारा इस संबंध में प्रस्तुत सूचना के अनुसार वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ दोनों अध्यायों के आयातों पर विचार करने का अनुरोध किया गया है।

7. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

7.1 घरेलू उद्योग ने विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में निम्नानुसार अभ्यावेदन किया है:

- (i) आवेदक ने यह दावा किया है कि उनके द्वारा विनिर्मित उत्पाद और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध उत्पाद के बीच ऐसा कोई ज्ञात अंतर नहीं है जिससे उनकी कीमत उपयोग, गुणवत्ता आदि पर कोई प्रभाव पड़ सकता हो। आवेदक ने यह भी दावा किया है कि उनके और विदेश उत्पादकों द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रौद्योगिकी और उत्पादन की प्राथमिक प्रक्रिया तुलनीय है; तथापि, उत्पादक उपलब्ध सुविधाओं पर आवश्यकताओं के आधार पर अपनी-अपनी उत्पादन प्रक्रिया को सुचारु बनाते हैं।

7.2 आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार।

किसी भी निर्यातक, आयातक, उपभोक्ता और अन्य हितबद्ध पक्षकार ने संबद्ध देश से भारत को निर्यातित संबद्ध वस्तु और घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित वस्तु की प्रकृति के बारे में कोई विवाद नहीं उठाया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच.

7.3 विचाराधीन उत्पाद टाइटेनियम डाई ऑक्साइड अनाटेज किस्म को उपशीर्ष 28230010 के अंतर्गत अध्याय 28 के अधीन वर्गीकृत किया जाता है तथापि, विचाराधीन उत्पाद अर्थात् टाइटेनियम डाई ऑक्साइड अनाटेज किस्म का आयात अध्याय 32 के अंतर्गत किए जाने की भी जानकारी मिली है। मूल मामले के अंतिम जांच परिणामों में प्राधिकारी ने यह भी माना है कि अध्याय 32 के अंतर्गत भी काफी मात्रा में आयात किए गए हैं। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी ने इस जांच के प्रयोजनार्थ टाइटेनियम डाई ऑक्साइड अनाटेज किस्म के संबंध में अध्याय 28 और 32 के अंतर्गत डीजीसीआईएंडएस द्वारा बताई गई आयात मात्राओं को लिया है।

7.4 भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से आयातित विचाराधीन उत्पाद भौतिक और रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्य और प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशनों, कीमत निर्धारण, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं की दृष्टि से तुलनीय है। विनिर्माण प्रक्रिया की समानता और प्रतिस्थापनीयता को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) के अनुसार "विचाराधीन उत्पाद" को परिभाषित करने के प्रयोजनार्थ इन दोनों को एक समान और एक उत्पाद माना जाना अपेक्षित है।

8. घ. घरेलू उद्योग की स्थिति और कार्य क्षेत्र

8.1 मूल जांच में टाइटेनियम डाई ऑक्साइड मैन्यूफैक्चरर्स एसो. ने भारत में टाइटेनियम डाई ऑक्साइड के उत्पादकों की ओर से निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष याचिका दायर की थी। मूल जांच में भारत में विचाराधीन उत्पाद के 3 उत्पादक थे। निर्णायक समीक्षा जांच में मै. द्रावनकोर टाइटेनियम प्रोडक्ट्स लि. ने घरेलू उद्योग की ओर से यह याचिका दायर की है। मै. किलबर्न कैमिकल्स लि. ने इस याचिका का समर्थन किया है। घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि एक अन्य उत्पादक नामतः मै. कोलमैक कैमिकल्स लि. बंद हो गया है। इस प्रकार पाटनरोधी नियमावली के अर्थ के भीतर याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग है। तथापि, याचिकाकर्ता ने यह दावा भी किया है कि नियम 23 के अंतर्गत निर्णायक समीक्षा में स्थिति को साबित करने की कोई जरूरत नहीं होती है।

8.2 घरेलू उद्योग के विचार

(i). पाटनरोधी शुल्क लागू करने हेतु याचिका मै. द्रावनकोर टाइटेनियम प्रोडक्ट्स लि. ने दायर की थी।

- (ii) याचिकाकर्ता के उत्पादन का कुल भारतीय उत्पादन में एक बड़ा हिस्सा बनता है । मै. किलबर्न केमिकल्स लि. ने इस याचिका का समर्थन किया है । स्पष्ट रूप से आवेदन का समर्थन करने वाले घरेलू उत्पादकों का घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान वस्तु के कुल उत्पादन में 50% से अधिक हिस्सा बनता है । इस प्रकार याचिकाकर्ता का "कुल पात्र भारतीय उत्पादन में प्रमुख हिस्सा है " और वह नियमों के अर्थ के भीतर " घरेलू उद्योग" है ।

आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

8.3 मौखिक सुनवाई के समय और उसके बाद प्रकटन विवरण के संबंध में दी गई टिपणियों में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित मुद्दे उठाए गए थे:

- (क) याचिकाकर्ता नियम 5 के अंतर्गत योग्यता को पूरा नहीं करते हैं;
- (ख) नियमों के अंतर्गत याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग नहीं हैं;
- (ग) सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के अनुसार प्राधिकारी को अनिवार्य रूप से सभी घरेलू उत्पादकों से सूचना एकत्र करनी चाहिए ।
- (घ) नियम 2(ख) में स्पष्ट रूप से यह निर्धारित है कि पाटनरोधी शुल्क लागू करने हेतु कोई याचिका अनिवार्य रूप से उद्योग के किसी प्रमुख उत्पादक द्वारा प्रस्तुत की जानी चाहिए । वर्तमान मामले में स्पष्ट रूप से इस अपेक्षा को पूरा नहीं किया गया है क्योंकि टीटीपीएल एक प्रमुख उत्पादक नहीं है क्योंकि इसके पास बाजार हिस्से का केवल 48.7% है जबकि 51% का प्रमुख हिस्सा केसीएल के पास है जिसने केवल याचिका का समर्थन किया है । यह विनम्र निवेदन किया गया है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के लिए किसी याचिका के किसी प्रमुख उत्पादक द्वारा समर्थन को पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) को पूरा करने की योग्यता नहीं माना जा सकता है । इस प्रकार, इस याचिकाकर्ता को पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग नहीं माना जा सकता है और उक्त याचिका को खारिज किया जाना चाहिए क्योंकि यह निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष रखे जाने की पात्र नहीं है ।
- (ङ) इस प्रकार वर्तमान याचिका क्षति निर्धारण के प्रयोजनार्थ एक व्यापक दस्तावेज नहीं मानी जा सकती है क्योंकि इसमें प्रदत्त आंकड़े अनन्य रूप से केवल ट्रावनकोर टाइटेनियम प्रोडक्ट्स लि. से संबंधित हैं और डीजीएडी द्वारा विश्लेषण के लिए केवल इन पर भरोसा नहीं किया जा सकता है । यह विनम्र अनुरोध किया जाता है कि केवल एक उत्पादक से संबंधित आंकड़ों को संपूर्ण उद्योग के लिए विस्तृत रूप से नहीं माना जा सकता है । इस प्रकार वर्तमान याचिका में आंकड़े पूरे नहीं हैं और इसे माननीय डीजीएडी द्वारा उचित ढंग से अस्वीकार किया जाना चाहिए ।

8.4 निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जांच

- i) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों की जांच की है और वर्तमान जांच परिणामों में इन पर उचित ढंग से विचार किया है । प्राधिकारी

मानते हैं कि वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है जिसे यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि क्या पहले लागू पाटनरोधी शुल्क को आगे जारी रखने की जरूरत है। पाटनरोधी नियमावली का नियम 5 जो नई जांच पर लागू होता है, वर्तमान निर्णायक समीक्षा के मामले में लागू नहीं होता है। यह भी नोट किया जाता है कि दिल्ली के माननीय उच्च न्यायालय ने यह माना है कि निर्णायक समीक्षा जांच प्राधिकारी की ओर से अनिवार्य है। यदि कोई आवेदन नहीं भी किया जाता है तो भी प्राधिकारी को निर्णायक समीक्षा करनी होगी। इसके अलावा, यह समुक्ति की गई है कि समर्थक के साथ याचिकाकर्ता का हिस्सा नियम 5 के अंतर्गत निर्धारित सीमाओं से अधिक है।

- ii) देश में संबद्ध वस्तु के सभी ज्ञात उत्पादकों के उत्पादन पर विचार करने के बाद प्राधिकारी ने यह समुक्ति की है कि दो अन्य कंपनियां हैं जिन्होंने भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन के लिए क्षमताओं का सृजन किया है। वे कंपनियां हैं, मै. किलबर्न कैमिकल लि. और मै. कोलमैक केमिकल्स लि.। मै. कोलमैक के संबंध में कोई सूचना उपलब्ध नहीं है। प्राधिकारी ने शेष उत्पादकों और उनके समर्थकों तथा याचिका के विरोध की उत्पादन मात्राओं का आकलन किया है। मै. किलबर्न कैमिकल्स ने याचिका का समर्थन किया है। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि इस जांच के प्रयोजनार्थ याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियमावली अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग हैं। तथापि याचिकाकर्ताओं द्वारा यह भी अनुरोध किया गया है कि नियम 23 के अंतर्गत निर्णायक समीक्षा जांच में योग्यता को साबित करने की कोई जरूरत नहीं है। किलबर्न कैमिकल के निष्पादन के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों पर कारणात्मक संबंध खंड में उचित ढंग से विचार किया गया है।

ड. पाटन का निर्धारण

9 सामान्य मूल्य का निर्धारण

9.1 आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार:

- i) यह विनम्र अनुरोध किया गया है कि यह याचिका अपर्याप्त सूचना से भरपूर है। याचिकाकर्ता याचिका के अनुबंध 3.2 के द्वारा कच्ची सामग्री की कीमत के रूप में प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय कीमतों को लेकर बाजार मूल्य की गणना कर रहे हैं। यह अनुरोध किया जाता है कि याचिकाकर्ताओं ने पहले ही यह मान लिया है कि प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय कीमतें चीन की कीमतों को सही ढंग से प्रदर्शित करती होंगी। दूसरी ओर इन पर किसी पक्षपात के बिना यह कहा गया है कि इस याचिका में सल्फर की उक्त अंतर्राष्ट्रीय कीमतें और उस स्रोत के बारे में नहीं बताया गया है जिससे यह कीमतें ली गई हैं। इसी प्रकार सामान्य मूल्य को इन लागतों के लिए अधिक वैकल्पिक आधार के बजाए घरेलू उद्योग की बिजली, सुविधाओं और भट्टी के तेल की कीमत को लेकर बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तुत किया गया है। घरेलू उद्योग को इस बात के लिए मजबूर किया जाना चाहिए कि वह इन आंकड़ों के स्रोत का

खुलासा करे। माननीय डीजीएडी के समक्ष यह अनुरोध किया जाता है कि सभी हितबद्ध पक्षकारों को याचिकाकर्ताओं द्वारा दिए गए आंकड़ों की प्रमाणिकता पर प्रश्न करने का अवसर दिया जाना चाहिए।

- ii) यह भी अनुरोध किया गया है कि घरेलू उद्योग से अनिवार्य रूप से निर्यात कीमत से संबंधित आंकड़ों का खुलासा करने के लिए भी कहा जाना चाहिए। यह विनम्र अनुरोध किया जाता है कि याचिका के अनुबंध 3.3 में केवल निवल निर्यात दिया गया है। तथापि, माल भाड़े, लागत और बीमा जैसे अनिवार्य व्यौरे प्रस्तुत नहीं किए गए हैं। आयातकों को संगत सूचना तक पहुंचने की अनुमति दी जानी चाहिए, ताकि वे डीजीएडी के समक्ष तथ्यपूर्ण तर्क रख सकें। ऐसे अप्रकटन से हितबद्ध पक्षकारों के डीजीएडी के विचारार्थ अनुरोध करने के अधिकार पर व्यावहारिक रूप से प्रतिबंध लगता है।

9.2 घरेलू उद्योग के विचार

- i) याचिकाकर्ता ने चीन के एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था होने का दावा किया है। याचिकाकर्ता ने यह अनुरोध किया है कि जब तक चीन के निर्यातक इन मानकों को पूरा नहीं करते हैं तब तक निर्दिष्ट प्राधिकारी को नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार सामान्य मूल्य निर्धारित करना चाहिए।

इन नियमों के अनुसार चीन के लिए सामान्य मूल्य निम्नलिखित आधारों में से किसी भी आधार पर निर्धारित किया जा सकता है।:

- (क) बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे देश में कीमत,
- (ख) बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे देश में परिकलित मूल्य,
- (ग) ऐसे किसी तीसरे देश से भारत समेत अन्य देश को कीमत
- (घ) भारत में वास्तव में चुकाई गई कीमत, तर्कसंगत लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए समायोजित।
- (ङ) भारत में वास्तव में देय कीमत तर्कसंगत लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए समायोजित।
- ii) सामान्य मूल्य अनिवार्य रूप से "ऐसे बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में खपत के लिए आशयित समान वस्तु के लिए व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में तुलनीय कीमत" होना चाहिए। इस आधार पर सामान्य मूल्य ज्ञात करने के लिए ऐसे तीसरे देश में एक सहयोगी उत्पादक द्वारा की गई सभी घरेलू बिक्रियों तथा उत्पादन लागत और अन्य संबद्ध सूचना और साक्ष्य (सभी सूचनाएं व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में) संबंधी पूर्ण और विस्तृत सत्यापन योग्य सूचना अपेक्षित होती है। तथापि, किसी भी निर्यातक ने इस संबंध में सहयोग अथवा सूचना प्रस्तुत नहीं की है।

9.3 उपर्युक्त के मद्देनजर याचिकाकर्ता ऐसे तीसरे देश से अन्य देशों की कीमत पर विचार नहीं कर सकता है जिसके कारण हैं: (क) सूचना उपलब्ध नहीं है; (ख) इस प्रकार अपनाई गई कीमत व्यापार की सामान्य प्रक्रिया वाली कीमत होनी चाहिए; (ग) ऐसी सूचना के लिए उस तीसरे देश में किसी उत्पादक का सहयोग भी अनिवार्य रूप से जरूरी है ।

9.4 याचिकाकर्ता ने यह अनुरोध किया है कि भारत चीन के उत्पादकों के लिए उपयुक्त प्रतिनिधिक देश है । भारत को प्रतिनिधिक देश मानने से न केवल सही और पर्याप्त सूचना तक पहुंचने में आसानी होगी बल्कि इस संबंध में कोई वास्तविक आधार नहीं है कि भारत एक उचित प्रतिनिधिक देश नहीं होगा । भारत को अन्य जांचकर्ता प्राधिकारियों ने भी एक उचित प्रतिनिधिक देश माना है ।

9.5 चूंकि चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण ऊपर उल्लिखित किसी भी आधार द्वारा किया जा सकता है, इसलिए चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण इन आधारों पर किया जा सकता है । (क) भारत में कीमत, और (ख) भारत में उत्पादन लागत, जिसे बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक व्ययों तथा लाभ समेत विधिवत ढंग से समायोजित किया गया हो । अतः याचिकाकर्ता ने संबद्ध देश के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन घरेलू उद्योग के लिए उपलब्ध सूचना के आधार पर किया है ।

9.6 आयातकों द्वारा प्रकटन विवरण के संबंध में की गई टिप्पणियां

(i) टीटीपीएल द्वारा प्रदत्त बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक खर्चों और लाभ समेत भारत में उत्पादन लागत के आधार पर सामान्य मूल्य की गणना गलत ढंग से की गई है । सामान्य मूल्य की गणना के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा लिए गए संघटकों का खुलासा आयातकों के समक्ष किया गया है ।

(ii) यह विचार कि चीन से आयातों की भारित औसत पहुंच कीमत आयातकों द्वारा प्रदत्त सूचना के समान रेंज में थी, गलत है ।

9.7 प्राधिकारी द्वारा जांच

(क) किसी भी निर्यातक ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है । ऐसी सूचना के अभाव में प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर भारत में उत्पादन लागत, जिसे बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक व्ययों तथा लाभ को जोड़कर विधिवत ढंग से समायोजित किया गया है, को अपनाकर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है । इसके अलावा, यह भी उल्लेख किया गया है कि यद्यपि, टीटीपीएल की उत्पादन लागत को अपनाया गया है, तथापि उसे टीटीपीएल द्वारा वहन की जा सकने वाली संभावित उच्च मजदूरी लागतों के संबंध में उचित ढंग से समायोजित किया गया है । यद्यपि, सामान्य मूल्य संतुलित रहा है , तथापि इस संबंध में यह बताना संगत है कि प्राधिकारी को वर्तमान मामले के तथ्य और परिस्थितियों के संबंध में विकल्प प्रस्तुत नहीं किए गए हैं और सामान्य मूल्य के निर्धारण पर प्रश्न उठाते समय हितबद्ध पक्षकार ऐसे किसी अन्य वैकल्पिक आधार को प्रस्तुत करने में असफल रहे हैं जिस पर सामान्य मूल्य की गणना की जा सकती है ।

(ख) प्राधिकारी हितबद्ध पक्षकारों की इस चिंता को नोट करते हैं कि सामान्य मूल्य के निर्धारण की पद्धति याचिका में पर्याप्त ढंग से स्पष्ट नहीं की गई है। तथापि, प्राधिकारी ने पूर्व में जारी प्रकटन विवरण तथा वर्तमान जांच परिणामों में इस पद्धति को पर्याप्त रूप से प्रकट किया है। तथापि, यह देखा गया है कि, यह देखते हुए कि कंपनी के पास घरेलू उद्योग की गोपनीय व्यावसायिक संवेदनशील सूचना है, लागतों और खर्चों संबंधी तथ्यों का खुलासा नहीं किया जा सकता है।

(ग) आयातकों के पहुंच मूल्य (डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों पर आधारित) के साथ पहुंच मूल्य (भारित औसत) की तुलना के संबंध में स्थिति निम्नानुसार है :-

विवरण	इकाई	जांच अवधि
मात्रा	मी.ट.	5,372
मूल्य (आंकलन योग्य मूल्य)	लाख रुपए	2,684.29
निर्यात कीमत (आंकलन योग्य मूल्य)	रु./मी.ट.	50,470
सीआईएफ निर्यात कीमत	रु./मी.ट.	49,971
सीमाशुल्क-मूलभूत	%	10
सीमाशुल्क की राशि-मूलभूत	रु./मी.ट.	5,047
आयातित उत्पाद की पहुंच कीमत	रु./मी.ट.	55,018

आयातकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर भारित औसत पहुंच मूल्य 60.60 रुपए प्रति किग्रा. बनता है।

ड.1 निर्यात कीमत

9.8 निर्यात कीमत के संबंध में प्राधिकारी ने यह देखा है कि किसी भी निर्यातक ने सहयोग नहीं किया है। आयातक मै. कन्साई नेरोलैक द्वारा प्रदत्त सूचना *** रुपए प्रति किग्रा. की पहुंच कीमत पर *** मी.ट. का आयात दर्शाती है और मै. बर्जर की सूचना *** रुपए प्रति किग्रा. की कीमत पर *** मी.ट. का आयात दर्शाती है। जांच अवधि के लिए डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों के अनुसार चीन से आयातों की भारित औसत पहुंच कीमत 54.97 रुपए प्रति किग्रा. बनती है। यह आयातकों द्वारा प्रदत्त सूचना के लगभग समान रेंज में है और इसे स्वीकार किया गया है। अतः निर्यात कीमत का निर्धारण डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रदत्त सूचना के आधार पर किया गया है। किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार द्वारा प्रदत्त किसी अन्य सूचना के अभाव में याचिकाकर्ताओं द्वारा निवल निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए निम्नलिखित समायोजन उपलब्ध कराए गए हैं:-

(क) समुद्री भाड़ा 60.41 अम.डॉ. पीएमटी की दर से

- (ख) समुद्री बीमा सीआईएफ मूल्य के 0.05% की दर से
- (ग) कमीशन एफओबी मूल्य के 1% की दर से
- (घ) पत्तन व्यय एफओबी मूल्य के 1% की दर से
- (ङ) अंतरदेशीय भाड़ा एफओबी मूल्य के 1% की दर से
- (च) बैंक का कमीशन एफओबी मूल्य के 0.05% की दर से

ड.2 पाटन मार्जिन

9.9 ऊपर यथानिर्धारित कारखाना द्वार स्तर पर निर्धारित सामान्य मूल्य और निवल निर्यात कीमत के आधार पर सभी निर्यातकों के लिए जांच अवधि के दौरान पाटन मार्जिन निम्नांकित तालिका के अनुसार है :

चीन	अम.डा. प्रति मी.ट.
सामान्य मूल्य	***
निवल निर्यात कीमत	***
पाटन मार्जिन राशि डॉ.	***
पाटन मार्जिन %	33.02

च. क्षति और कारणात्मक संबंध का निर्धारण

10. यह समीक्षा संबंधी याचिका पाटन और क्षति के जारी रहने या पाटन और क्षति की संभावना के मद्देनजर लागू पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने और उसे अगले पांच वर्षों के लिए बढ़ाने के संबंध में की गई है ।

10.1 सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9(क)(5) के अनुसार लागू पाटनरोधी शुल्क कोई यदि पहले नहीं हटाया जाता है तो उसके लागू होने की तारीख से पांच वर्षों के बाद उसका प्रभाव समाप्त हो जाएगा बशर्ते कि यदि केन्द्रीय सरकार किसी समीक्षा में यह मत व्यक्त करती है कि ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन और क्षति के जारी रहने या उनकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है और केन्द्र सरकार समय-समय पर इसके लागू होने की अवधि को आगे पांच वर्षों के लिए बढ़ा सकती है और आगे की अवधि ऐसे समय विस्तार की तारीख से शुरू होगी ।

10.2 उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि पूर्व में लागू शुल्क उसे लागू किए जाने की तारीख से पांच वर्षों की अवधि के लिए प्रवृत्त रहेगा, तथापि ऐसी स्थिति में जबकि यदि पाटनरोधी शुल्क को हटाया जाता है तो पाटन के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना हो और जहां घरेलू उद्योग को पाटनरोधी शुल्क के हटाए जाने से क्षति होना जारी हो, या घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति

होने की संभावना हो तो लागू पाटनरोधी शुल्क को आगे 5 वर्ष की अवधि के लिए जारी रखा जाना चाहिए ।

10.3 डब्ल्यूटीओ करार के अनुच्छेद 3.1 और नियमावली के अनुबंध-II में इन दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच की व्यवस्था है, (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव । पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है । पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पादों की कीमतों की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी करना है या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी मात्रा में बढ़ गई होती ।

11. घरेलू उद्योग पर पाटित आयात के प्रभाव के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iv) में निम्नानुसार प्रावधान है :

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमत, पाटन मार्जिन की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारकों; नकद प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का मूल्यांकन शामिल होगा ।"

12. प्राधिकारी ने क्षति की जांच के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों को नोट किया है और उचित स्थानों पर उठाए गए मुद्दों का समाधान किया है । प्राधिकारी ने तथ्यों और हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों पर विचार करते हुए क्षति संबंधी मापदंडों की वस्तुनिष्ठ ढंग से जांच की है ।

च.1 घरेलू उद्योग के विचार

13. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित दावे प्रस्तुत किए हैं कि उन्हें चीन जन.गण. से पाटन के कारण वास्तविक क्षति उठानी पड़ी है :

13.1. ऐसी स्थिति में जबकि पाटनरोधी शुल्क को हटाए जाने पर पाटन के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है और जहां घरेलू उद्योग को पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने की स्थिति में क्षति होना जारी है या घरेलू उद्योग को क्षति होने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है, वहां लागू पाटनरोधी शुल्क को आगे 5 वर्ष की अवधि के लिए जारी-रखा जाना चाहिए । वर्तमान मामले में चीन से इस उत्पाद का पाटन जारी है । यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क चीन पर से हटाया जाता है तो पाटन में और तेजी आ जाएगी ।

13.2. घरेलू उद्योग को क्षति होना जारी है और यदि शुल्क हटाया जाता है तो क्षति के जारी रहने की संभावना है। यदि घरेलू उद्योग को क्षति होना जारी नहीं है तो याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि यदि चीनी आयातों पर से शुल्क हटाया जाता है तो उनसे क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

13.3 घरेलू उद्योग ने पाटनरोधी शुल्क को एक बेंचमार्क रूप से इस आधार पर निश्चित राशि के रूप में परिवर्तित करने का अनुरोध किया है कि विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन के लिए अपक्षित निविष्टियों की लागत काफी अधिक बढ़ गई है और इसलिए उत्पाद की इस किस्म के लिए बेंच मार्क रूप उपयुक्त नहीं है।

च.2

13.4 निर्यातकों, आयातकों, प्रयोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

1. सुनवाई की तारीख को दी गई अतिरिक्त सूचना का स्रोत उपलब्ध नहीं कराया गया है।
2. वर्तमान निर्णय के लिए आयातकों के आंकड़े अनिवार्य हैं और आयातकों को बाहर रखने संबंधी घरेलू उद्योग के तर्क संबंधी कोई भी अभ्यावेदन अस्वीकार किया जाना चाहिए। डीजीएडी के नियम 23 के अनुसार ऐसा शुल्क की पुनरावृत्ति की सही ढंग से जांच के लिए नहीं किया जाना चाहिए।
3. टीटीपीएल के पास घरेलू उत्पादक के रूप में योग्यता नहीं है।
4. याचिका और अतिरिक्त अनुरोधों में दिए गए आंकड़ों में अनियमितताएं हैं।
5. घरेलू उद्योग को बेंच मार्क कीमत को निर्धारित करने की पद्धति के बारे में सूचना उपलब्ध करानी चाहिए।
6. उपलब्ध कराए गए अतिरिक्त आंकड़े अनन्य रूप से TiO_2 अनाटेज ग्रेड के आयातों से संबंधित नहीं हैं।
7. उपलब्ध कराए गए अतिरिक्त आंकड़े जांच अवधि से बाहर के हैं और उनमें 2008-09 के आंकड़े शामिल हैं और इसलिए इस सूचना को अस्वीकार किया जाना चाहिए।
8. याचिकाकर्ताओं ने गलत ढंग से यह कहा है कि निर्णायक समीक्षा में बाजार में विघटन दर्शाने के लिए पर्याप्त है जिसमें कोई वास्तविक क्षति दर्शायी नहीं गई है।
9. क्षति संबंधी सभी मापदंडों को पूर्ण रूप से संबोधित नहीं किया गया है।
10. आयातों के कारण कीमत कटौती नहीं हुई है और इसलिए कोई कारणात्मक संबंध सिद्ध नहीं किया गया है। इसके अलावा, अन्य देशों से आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है।
11. संबद्ध वस्तुओं के आयात कीमत घरेलू बिक्री कीमत से अधिक है, इसलिए कोई कीमत कटौती नहीं हुई है।
12. किलबर्न कैमिकल्स को क्षति नहीं हुई है।
13. टीटीपीएल ने अपनी वस्तुओं की अत्यधिक अप्रतिस्पर्धी कीमतें रखी हैं और यही कारण है कि केसीएल को अपनी कीमतें घटानी पड़ी हैं।
14. टीटीपीएल अपनी स्वयं की प्रचालनात्मक कठिनाइयों के कारण क्षति उठा रहा है और न कि आयातों के कारण।

15. उपलब्ध कराए गए अतिरिक्त आंकड़े TiO_2 अनाटेज ग्रेड के आयातों से संबंधित नहीं है ।
16. किलबर्न के क्षति संबंधी मापदंडों के विश्लेषण पर विचार नहीं किया गया है जिसमें लाभ, सकारात्मक क्षमता उपयोग, उत्पादन, बिक्री और बाजार हिस्से की एक अलग तस्वीर दर्शायी गई है ।
17. याचिकाकर्ताओं ने सार्वजनिक सुनवाई में यह तर्क दिया था कि आयातकों को लिखित अनुरोध करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए तो उक्त तर्क याचिकाकर्ताओं पर भी समान रूप से लागू होता है जिन्होंने सार्वजनिक सुनवाई के दौरान आयात मात्राओं और मूल्य के संबंध में नए आंकड़े उपलब्ध कराए हैं ।
18. चूंकि कीमतों में 17% की वृद्धि हुई है, इसलिए कोई कीमत न्यूनीकरण नहीं किया गया है ।
19. चीन के निर्यातकों की अधिशेष क्षमता संबंधी अतिरिक्त आंकड़े TiO_2 अनाटेज ग्रेड की उत्पादन क्षमता से अनन्य रूप से संबंधित नहीं है ।
20. मार्च, 2007 में समाप्त हुए वर्ष के लिए सीएजी की रिपोर्ट में ट्रावनकोर टाइटेनियम प्रोडक्ट्स लि. द्वारा कार्यनीतिक प्रबंधन में कमी के कारण गिरावट का निष्कर्ष प्रदर्शित किया गया है ।

च. 3 प्राधिकारी द्वारा जांच

14. क्षति की वर्तमान स्थिति का आकलन करने के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के मात्रा और कीमत संबंधी प्रभावों की जांच की है और क्षति की मौजूदगी तथा पाटन और क्षति के बीच कारणात्मक संबंध, यदि कोई हो, की जांच करने के लिए कीमत और लाभप्रदता पर इसके प्रभाव की जांच की है । प्राधिकारी ने क्षति संबंधी मापदंडों के विश्लेषण के बारे में पक्षकारों की चिंताओं को नोट किया है और सभी अनिवार्य क्षति संबंधी मापदंडों का विश्लेषण करके इन चिंताओं का समाधान किया है ।

14.1 आयातकों द्वारा प्रकटन विवरण के संबंध में दी गई टिप्पणियां और प्राधिकारी द्वारा जांच

14.2 यह नोट किया गया है कि आयातकों ने किलबर्न के संबंध में ली गई बिक्री मात्राओं, टीटीपीएल की स्थापित क्षमता, क्षति संबंधी अन्य मापदंडों और क्षतिरहित कीमत के प्रकटन आदि के संबंध में मुद्दे उठाए हैं । प्राधिकारी ने इन सभी मुद्दों की जांच की है और यह नोट करते हैं कि किलबर्न के संबंध में दी गई सूचना याचिकाकर्ताओं द्वारा यथाप्रदत्त उनके वित्तीय विवरणों में दी गई सूचना के आधार पर अपनाई गई है ।

14.3 स्थापित क्षमता के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयातकों द्वारा पहले यह तर्क दिया गया था कि याचिकाकर्ता के पास केवल 15,000 मी.ट. की स्थापित क्षमता है और न कि 25,000 मी.ट. की, जैसा कि याचिका में दावा किया गया है । जांच और सत्यापन करने पर प्राधिकारी ने क्षमता को 15,000 मी.टन माना है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि यदि स्थापित क्षमता को 25,000 मी.टन माना जाता, तो क्षति और अधिक बढ़ गई होती । प्रकटन विवरण के पैरा 18.1 में प्रदत्त उत्पादन संबंधी आंकड़ों और याचिका के प्रारूप IV- क भाग-II में प्रदत्त सूचना के संबंध में यह नोट किया जाता है कि प्रकटन विवरण में बताए गए आंकड़े प्राधिकारी द्वारा

सत्यापित हैं। इसके अलावा, उत्पादन में इस अंतर से उत्पन्न प्रभाव को आयातकों द्वारा बताया नहीं गया है।

14.4 इसके अलावा, यह अनुरोध किया गया है कि डीजीएडी ने यह कहकर गलती की है कि आयातों का पहुंच मूल्य बिक्री कीमत से काफी कम है, आयातों की पहुंच कीमत क्षति रहित कीमत से काफी कम है और बिक्रियों की लागत में वृद्धि बिक्री कीमत में हुई वृद्धि के अनुपातिक रूप से बराबर नहीं रही है। यह कहा जा सकता है कि आयात कीमतों के संबंध में प्राधिकारी ने इन आधारों पर निर्धारण किया है - (क) सत्यापित सूचना; (ख) घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत। जांच अवधि में सीआईएफ आयात कीमत 49.96 रुपए प्रति किग्रा. रही थी। सीमाशुल्क को 10% मानते हुए आयातों की पहुंच कीमत 55 रुपए प्रति किग्रा. बनती है। आयातकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर भारत औसत पहुंच कीमत 60.60 रुपए प्रति किग्रा. बनती है।

14.5 यह बताया गया है कि चीन के निर्यातकों के लिए अधिशेष क्षमता संबंधी आंकड़ों की सच्चाई का आकलन याचिकाकर्ता द्वारा दिए गए गलत विवरणों के आलोक में पुनः किया जाना चाहिए। यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने उपलब्ध सूचना के आधार पर कार्रवाई की है। इसके अलावा, आयातकों ने ऐसी क्षमताओं में संभावित गिरावट को दर्शाने वाला कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है। कच्ची सामग्री की बढ़ाई गई और अप्रतिस्पर्धी लागत के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि टीटीपीएल की निविष्टि की कीमतें तुलनीय हैं या अंतर्राष्ट्रीय कीमतों से कम हैं।

14.6 क्षतिरहित कीमत ज्ञात करने के लिए अपनाए गए विभिन्न संघटकों के समग्र आंकड़ों के प्रकटन के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति रहित कीमत का संघटक वार ब्यौरा व्यापारिक ढंग से संवेदनशील गोपनीय सूचना पर आधारित है और इसलिए इसका खुलासा अन्य पक्षकारों को नहीं किया जा सकता है। यह एक संगत प्रक्रिया है।

15. (क) मात्रात्मक प्रभाव: पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव:

संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा के प्रभाव के निम्नानुसार जांच की गई है:

15.1 मांग तथा बाजार हिस्सा

प्राधिकारी ने भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्रियों और सभी स्रोतों से आयात के योग के रूप में देश में उत्पाद की मांग और स्पष्ट खपत निर्धारित की है। इस प्रकार आकलित मांग को निम्नांकित तालिका में देखा जा सकता है। यह देखा जाता है कि देश में इस उत्पाद की मांग 2006-07 तक बढ़ोत्तरी की प्रवृत्ति दर्शाने के बाद आधार वर्ष से जांच अवधि में मामूली गिरावट प्रदर्शित करती है।

आंकड़े मी.ट. में

मांग	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
घरेलू उद्योग की बिक्री	14396	12077	12468	11020
किलबर्न की बिक्री (समर्थक)	8490	9077	7389	9166
आयात - संबद्ध देश	6059	9210	9799	5372
आयात - अन्य देश	3990	3647	5915	5749
कुल मांग	32936	34011	35571	31307

15.2 आयात मात्रा तथा बाजार हिस्सा

पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि निर्णायक समीक्षा मामले में इसे वर्तमान मामले में आवश्यक संशोधनों के साथ लागू किया जाना अपेक्षित है।

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
चीन से आयात (मी.ट.)	6,059	9,210	9,799	5,372
निम्न के संबंध में आयातों का हिस्सा				
➤ भारत में कुल आयात	60.29	71.63	62.36	48.31
➤ भारत में मांग	18.40	27.08	27.55	17.16
➤ घरेलू उद्योग का उत्पादन	35.92	60.19	74.22	40.69

इस तर्क के संबंध में कि आयातों में जांच की वर्तमान अवधि में गिरावट आई है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है। आयातों में वृद्धि पाटनरोधी शुल्क के आगे विस्तार की एक आवश्यक पूर्व शर्त नहीं है। वस्तुतः उस स्थिति में भी पाटनरोधी शुल्क का समय विस्तार किया जा सकता है जबकि उत्पाद का कोई निर्यात नहीं किया गया हो। घरेलू उद्योग ने नई मर्दे उपलब्ध कराई हैं जो दर्शाती हैं कि चीन के टाइटेनियम डाई ऑक्साइड उद्योग को ओलंपिक्स के मद्देनजर यह मानते हुए उत्पादन को निलंबित करने का निर्देश दिया गया था कि इस उत्पाद से संबंधित उत्पादन की प्रक्रिया अत्यधिक प्रदूषणकारी प्रक्रिया मानी जाती है।

15.3. प्राधिकारकर्ता ने दावा किया है कि पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी में भारी मात्रा में आयात हुआ है और वह कीमत जिन पर ये आयात हुए हैं, स्पष्ट रूप से यह सिद्ध करती है कि ये आयात पाटनरोधी शुल्क चुकाए बिना किए गए हैं। मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के बावजूद आयातों की भारी

मात्रा को देखते हुए यह स्पष्ट है कि आयातों की मात्रा पाटनरोधी शुल्क के अभाव में निश्चित रूप से बढ़ेगी। प्राधिकारी यह समुक्ति करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी के बावजूद काफी मात्रा में आयात हुए हैं।

16. उत्पादन, क्षमता तथा क्षमता उपयोग

16.1 घरेलू उद्योग के वास्तविक उत्पादन, क्षमता और क्षमता उपयोग में कमी आई है जैसा कि निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है -

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
क्षमता (मी.ट.)	15,000	15,000	15,000	15,000
उत्पादन (मी.ट.)	16,868	15,300	13,203	11,517
क्षमता उपयोग (%)	112.45	102.00	88.02	76.78

16.2 प्राधिकारी यह समुक्ति करते हैं कि बाजार में पाटित आयातों की लगातार मौजूदगी का कारण 2005-06 से उत्पादन में लगातार गिरावट आई है। परिणामस्वरूप क्षमता उपयोग में भी गिरावट आई है।

16.3 यह नोट किया जाता है कि यद्यपि घरेलू उद्योग अपनी पूर्ण क्षमता का उपयोग करने में सक्षम रहा था (और वस्तुतः उसने स्थापित क्षमता से काफी अधिक क्षमता उपयोग हासिल किया था), फिर भी क्षमता उपयोग में नुकसान हुआ था और भारी गिरावट आई थी। यह तथ्य कि घरेलू उद्योग ने 100% से अत्यधिक क्षमता उपयोग हासिल किया है, स्पष्ट रूप से घरेलू उद्योग की तकनीकी क्षमता को दर्शाता है। पाटन के कारण वाणिज्यिक व्यवहार्यता घरेलू उद्योग को क्षति का एक रूप रही है। पाटन का प्रभाव इतना अधिक रहा है कि घरेलू उद्योग को अपना उत्पादन घटाने के लिए बाध्य होना पड़ा है।

17. बिक्री:

17.1 घरेलू उद्योग की बिक्री मात्राएं निम्नांकित तालिका में दी गई हैं: -

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
घरेलू बिक्री (मी.ट.)	14,396	12,077	12,468	11,020
सूचीबद्ध	100	84	87	77

17.2 घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा उत्पादन के समान प्रवृत्ति दर्शाती है । चालू क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्रियों में भारी गिरावट आई है ।

18. बाजार हिस्सा

18.1 भारत में मांग में घरेलू उद्योग और विभिन्न अन्य पक्षकारों का हिस्सा निम्नानुसार रहा था:

मांग में बाजार हिस्सा(%)	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
घरेलू उद्योग की बिक्री	43.71	35.51	35.05	35.20
किलबर्न की बिक्री- सहयोगी	25.78	26.69	20.77	29.28
आयात - चीन	18.40	27.08	27.55	17.16
आयात - अन्य देश	12.11	10.72	16.63	18.36
कुल	100	100	100	100

यह देखा जाता है कि वर्तमान पाटनरोधी उपाय भारत में संबद्ध वस्तु के पाटन से चीन के निर्यातकों को रोकने के लिए पर्याप्त नहीं रहे हैं । पाटनरोधी शुल्क लागू रहने के बावजूद चीन से आयातों का बाजार में काफी अधिक हिस्सा बना हुआ है ।

18.2 याचिकाकर्ता ने इस संबंध में यह अनुरोध किया है कि यह सामान्य अनुभव और प्रत्याशा रहती है कि पाटनरोधी शुल्क के लागू होने से आयातों के हिस्से में भारी गिरावट आएगी-पाटित आयातों की पहुंच पूर्व के समय में आयातों में भारी वृद्धि का एकमात्र कारण रही है, इसके अलावा, ऐसी स्थिति में जबकि घरेलू उद्योग मांग को पूरा करने की स्थिति में है । तथापि, वर्तमान मामले में पाटनरोधी शुल्क लागू रहने के बावजूद आयातों की मात्रा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है जिसका कारण मौजूदा पाटनरोधी शुल्क रहे हैं । घरेलू उद्योग को पाटनरोधी शुल्क लागू किए जाने के बाद अपने बाजार हिस्से को पुनः हासिल करने की आशा थी । तथापि, पाटित आयातों की लगातार मौजूदगी से घरेलू उद्योग अपनी बिक्रियां और बाजार हिस्सा बढ़ाने में असमर्थ रहा है ।

18.3 प्राधिकारी यह समुक्ति करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का हिस्सा घटकर 8.51% रह गया है, जिसमें से 3.5% एक अन्य घरेलू उत्पादक अर्थात् मै. किलबर्न द्वारा हथिया लिया गया है । अन्य देशों से आयातों में 6.25% की वृद्धि हुई है और चीन से आयातों में 1.25% की गिरावट आई है, इस प्रकार शेष 5% पर अन्य देशों ने कब्जा कर लिया है । इस प्रकार, मात्रात्मक प्रभाव विद्यमान नहीं है, तथापि पिछले वर्षों से जांच अवधि के दौरान आयातों में गिरावट के संबंध में घरेलू उद्योग ने यह दर्शाने वाली समाचार मर्दे उपलब्ध कराई हैं कि इस बात पर विचार करते हुए चीन के टाइटेनियम डार्ड ऑक्साइड उद्योग को औलम्पिक के महेनजर उत्पादन निलंबित करने का निर्देश दिया गया था कि इस उत्पाद से संबंधित उत्पादन प्रक्रिया को अत्यधिक प्रदूषणकारी प्रक्रिया माना जाता है ।

19. ख) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

i) संबद्ध देश से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर पड़ने वाले प्रभाव की कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई हो, के संदर्भ में जांच की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) और क्षति रहित कीमत (एनआईपी) (घरेलू उद्योग की लागत निर्धारण संबंधी सूचना के आधार पर निकाली गई) की तुलना अनाटेज ग्रेड के लिए संबद्ध देश से आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है।

ii) जांच अवधि के दौरान पाटित आयातों के पहुंच मूल्य और घरेलू बाजार में घरेलू बिक्री कीमत के बीच संबद्ध वस्तु की तुलना की गई थी। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति के निर्धारण में कर, घरेलू उद्योग द्वारा दी गई रिबेटों, छूटों और कमीशन को समायोजित किया गया है। कम कीमत पर बिक्री क्षति के आकलन का एक महत्वपूर्ण संकेतक होता है; इस प्रकार प्राधिकारी ने क्षतिरहित कीमत ज्ञात की है और कम कीमत पर बिक्री की मात्रा ज्ञात करने के लिए इसकी तुलना पहुंच मूल्य के साथ की है। घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत का मूल्यांकन जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन लागत पर उचित ढंग से विचार करते हुए किया गया है। संबंधित स्थिति निम्नानुसार है :

कीमत कटौती	रु./मी.ट.
निवल बिक्री प्राप्ति	***
पहुंच कीमत	***
कीमत कटौती रूपए	***
कीमत कटौती %	33.16
कम कीमत पर बिक्री	
क्षति रहित कीमत	***
पहुंच कीमत	***
कम कीमत पर बिक्री रूपए	***
कम कीमत पर बिक्री %	34.11

iii) यह पाया गया है कि (क) आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है, इस प्रकार परिणामस्वरूप कीमत कटौती हो रही है; (ख) घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से काफी कम रही है, इस प्रकार कम कीमत पर बिक्री हो रही है (ग) जबकि क्षति अवधि के दौरान उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है, तथापि बिक्री कीमत में उसी अनुपात

में वृद्धि नहीं हुई थी । अतः आयात घरेलू उद्योग की कीमतों पर बाजार में काफी दबाव डाल रहे हैं ।

iv) प्राधिकारी देखते हैं कि जांच अवधि और क्षति अवधि के दौरान चीन जन.गण. से पहुंच कीमत अन्य देशों से कीमत से काफी कम रही थी ।

सीआईएफ कीमत		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
चीन जन.गण.	रु./मी.टन	47798	48408	52075	49968
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101	109	105
अन्य देश	रु./मी.टन	93198	107576	113767	89856
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	115	122	96

अन्य देशों से आयातों के संबंध में यह अवलोकन किया जाता है कि अन्य देशों से आयातों में वृद्धि हुई है । तथापि, यह भी देखा जाता है कि अन्य देशों से आयात कीमत चीन से आयात कीमत से अधिक है और यह घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से भी अधिक है । चूंकि अन्य देशों से होने वाले आयात घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती नहीं कर रहे हैं, इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि अन्य देशों से आयात कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं । इस प्रकार प्राधिकारी मानते हैं कि चीन से पाटित आयातों का कीमत प्रभाव काफी अधिक रहा है ।

20. क्षति संबंधी अन्य मानदंडों की जांच

घरेलू उद्योग की मात्रा और कीमतों तथा क्षति संबंधी प्रमुख संकेतकों जैसे आयातों की मात्रा और मूल्य, क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और घरेलू उद्योग की बिक्रियों तथा पूर्ववर्ती खंडों के विभिन्न भागों में बाजार हिस्सों के साथ मांग की प्रवृत्ति पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के बाद ऐसे अन्य आर्थिक मापदंडों जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी की ओर संकेत कर सकते हैं, का निम्नानुसार विश्लेषण किया गया है:

21. लाभ/हानि, निवेश पर आय तथा नकद प्रवाह - निवेशों पर आय, ब्याज से पहले और बाद में लाभ/हानि, निवेश पर आय और नकद लाभ की गतिविधियां निम्नांकित तालिका में दर्शाई गई हैं:

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
लाभ/(हानि)					
बिक्री की लागत - घरेलू	रु./मी.टन	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	119	114	135
बिक्री कीमत - घरेलू	रु./मी.टन	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	100	104	117

लाभ/(हानि) - घरेलू	रु./मी.टन	***	(***)	(***)	(***)
सूचीबद्ध		100	(461)	(175)	(398)
लाभ/(हानि) - घरेलू	रु./लाख	***	(***)	(***)	(***)
सूचीबद्ध		100	(387)	(152)	(305)
ब्याज पूर्व लाभ तथा घरेलू कर	रु./लाख	***	(***)	(***)	(***)
सूचीबद्ध		100	(374)	(139)	(295)
नकद लाभ	रु./लाख	***	(***)	(***)	(***)
सूचीबद्ध		100	(221)	(71)	(168)
निवेश पर आय					
सकल स्थिर परिसंपत्तियां	रु./लाख	***	***	***	***
निवल स्थिर परिसंपत्तियां	रु./लाख	***	***	***	***
कार्यशील पूंजी	रु./लाख	***	***	***	***
कुल नियोजित पूंजी (जीएफए आधार पर)	रु./लाख	***	***	***	***
कुल नियोजित पूंजी (एनएफए आधार पर)	रु./लाख	***	***	***	***
घरेलू के लिए नियोजित पूंजी (जीएफए आधार पर)	रु./लाख	***	***	***	***
घरेलू के लिए नियोजित पूंजी (एनएफए आधार पर)	रु./लाख	***	***	***	***
नियोजित पूंजी पर आय-जीएफए	%	***	(***)	(***)	(***)
प्रवृत्ति (सूचीबद्ध 2004-05=100)	सूचीबद्ध	100	(671)	(209)	(310)
नियोजित पूंजी पर आय-एनएफए	%	***	(***)	(***)	(***)
प्रवृत्ति (सूचीबद्ध 2004-05=100)	सूचीबद्ध	100	(850)	(499)	(376)

आंकड़े दर्शाते हैं कि बिक्री की लागत में 35% की वृद्धि हुई है जबकि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बिक्री कीमत में केवल 17% की वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में प्रति मी.ट. लाभ में भारी गिरावट आई है।

21.1 आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में लाभ (पीबीआईटी) में भारी गिरावट आई है। जांच अवधि में घरेलू उद्योग घाटा उठा रहा था। पीबीआईटी, जो आधार वर्ष में सकारात्मक था, जांच अवधि में काफी अधिक ऋणात्मक हो गया था।

21.2 नकद प्रवाह पर पाटित आयतों के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए प्राधिकारी ने नकद लाभों की प्रवृत्ति पर विचार किया है। नकद लाभ का निर्धारण लाभ (कर-पूर्व लाभ) में मूल्यहास की राशि को जोड़कर किया गया है। यह प्रवृत्ति पीबीआईटी जैसी प्रवृत्ति दर्शाती है। नकद लाभ परिवर्तित होकर नकद घाटे बन गए हैं।

21.3 यह भी अवलोकन किया गया है कि घरेलू उद्योग को पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बाद 2004-05 में लाभ हुआ था। तथापि, घरेलू उद्योग को 2005-06 के बाद से काफी अधिक वित्तीय घाटा उठाना पड़ा है। वस्तुतः वित्तीय घाटे इतने अधिक रहे हैं कि घरेलू उद्योग ब्याज और मूल्यहास संबंधी व्ययों की वसूली भी नहीं कर पाया है।

22. मालसूचियां:

घरेलू उद्योग के पास उपलब्ध मालसूचियां निम्नानुसार रही हैं:

	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
औसत स्टॉक	मी.ट.	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	84	35	44

22.1 घरेलू उद्योग की मालसूचियां घाटे में भी संबद्ध वस्तु को बेचने की उसकी अक्षमता की ओर संकेत करती हैं। यद्यपि, मालसूचियों में गिरावट भी आई है, तब भी यह नोट करना संगत है कि उस स्तर पर भी मालसूची काफी अधिक रही है।

23. रोजगार, मजदूरी तथा उत्पादकता

		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
रोजगार	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	96.88	88.34	76.19

23.1 यह देखा जाता है कि इस अवधि के दौरान रोजगार में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग के पास पिछले 10 वर्षों में हुई भारी क्षति को देखते हुए रोजगार को घटाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है। घरेलू उद्योग समयोपरि मजदूरी के प्रयोग के माध्यम से रोजगार को घटाकर, जिससे समग्र स्थिति इष्टतम बन रही है, अपने अस्तित्व को किसी भी तरह से बचाए रखने का प्रयास कर रहा है।

		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
		***	***	***	***
प्रति दिवस उत्पादकता	मी.ट.				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	93.38	85.88	68.67
		***	***	***	***
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.ट.				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	96.39	97.22	90.13

23.2 उत्पादन में गिरावट के मद्देनजर इस अवधि के दौरान उत्पादकता में गिरावट आई है। तथापि, यदि उत्पादकता पर पूर्व में विद्यमान दर के अनुसार भी विचार किया जाता है तो भी यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई होती। घरेलू उद्योग द्वारा दी गई मजदूरी में क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है जिसके बावजूद घरेलू उद्योग को काफी अधिक घाटे उठाने पड़े हैं। यदि मजदूरी की दर समान रही होती, तो घरेलू उद्योग को और अधिक वित्तीय घाटे उठाने पड़ते।

24. वृद्धि

मात्रा तथा कीमत संबंधी मापदंडों जैसे बिक्री, मात्रा, उत्पादन, क्षमता उपयोग, लाभप्रदता, निवेश पर आय और नकद प्रवाह की दृष्टि से घरेलू उद्योग की वृद्धि ऋणात्मक रही है।

25. पाटन मार्जिन- प्राधिकारी नोट करते हैं कि पूर्ववर्ती जांच में निर्धारित पाटन मार्जिन काफी अधिक पाया गया था। आवेदन में निर्धारित पाटन मार्जिन चीन के उत्पादकों द्वारा भारी पाटन को जारी रखने को दर्शाता है।

26. पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता - प्राधिकारी इस संबंध में याचिकाकर्ता के निम्नलिखित अनुरोधों को नोट करते हैं: -

घरेलू उद्योग के लिए प्रदूषण नियंत्रण उपाय करना अपेक्षित है। इसके अलावा, अनुसंधान और विकास प्रत्येक उद्योग का एक अभिन्न अंग है। वर्तमान उत्पाद कोई अपवाद नहीं है, तथापि भारी वित्तीय घाटों को देखते हुए जबकि स्वयं संयंत्र को ही चलाना काफी मुश्किल है, तब कंपनी को केरल सरकार या सार्वजनिक क्षेत्र की अन्य कंपनियों से यह अनुरोध करने के लिए बाध्य होना पड़ा है कि वे काफी अधिक निधियों से उनकी सहायता करें, जिससे वे अनुसंधान एवं विकास में निवेश कर सकें या प्रदूषण नियंत्रण काफी मुश्किल कार्य बन गया है। यह स्पष्ट किया जाता है कि कंपनी ने अब तक खर्चीले प्रदूषण

नियंत्रण को नहीं अपनाया है बल्कि वह ऐसा करने की प्रक्रिया में है। तथापि, कंपनी की कठिनाई यह है कि उसे उन कंपनियों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है जिन्हें शायद प्रदूषण नियंत्रण उपायों में निवेश नहीं करना पड़ता है। यह नोट किया जाता है कि लगातार पाटन से पूंजी जुटाने की कंपनी की क्षमता पर काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

27. क्षति संबंधी निष्कर्ष

27.1 विरोधी पक्षकारों द्वारा जोरदार ढंग से यह तर्क दिए गए हैं कि-

- (क) एक अन्य उत्पादक मै. किलबर्न कैमिकल्स को क्षति नहीं हुई है ;
- (ख) किलबर्न कैमिकल्स ने याचिकाकर्ता को क्षति पहुंचाई है;
- (ग) तीसरे देशों से हुए आयातों से याचिकाकर्ता को क्षति हुई है।

27.2 इस संबंध में हितवद्ध पक्षकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना की दृष्टि से प्राधिकारी का निम्नानुसार मत है -

- (क) कंपनी के उत्पादन और बिक्रियों में वृद्धि होने पर भी किलबर्न का क्षमता उपयोग इष्टतम से कम है ;
- (ख) किलबर्न की लागप्रदता में भारी गिरावट आई है जैसा कि निम्नांकित तालिका से देखा जा सकता है, (चूंकि किलबर्न कैमिकल्स ने प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है, इसलिए वर्तमान समुक्तियां विरोधी पक्षकारों द्वारा प्रदत्त साक्ष्य पर आधारित हैं);
- (ग) किलबर्न कैमिकल्स की वार्षिक रिपोर्टों के अनुसार कंपनी की स्थिति, संक्षेप में निम्नानुसार है:-

		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
बिक्रियां	मी.ट.	8490	9077	7389	9166
कर पूर्व लाग	रु.	72,500,000	9,107,449	9,159,738	3,567,664
कर पश्चात लाग	रु.	34,900,000	8,458,264	6,954,264	1,973,921
लाभांश	%	18%	20%	20%	5%
प्राप्त इकाई लाग					.
कर पूर्व लाग	रु./मी.ट.	8,539	1,003	1,240	389
कर पश्चात लाग	रु./मी.ट.	4,111	932	941	215

घ) उपर्युक्त से यह देखा जाता है कि यद्यपि यह स्वीकार किया गया है कि किलबर्न को मात्रा संबंधी लाभ हुए हैं, यह स्पष्ट है कि लाभ, निवेश पर आय और नकद प्रवाह की दृष्टि से कंपनी के निष्पादन में काफी विकृति आई है। वस्तुतः यह मानते हुए कि किलबर्न घरेलू उद्योग का हिस्सा है, यह देखा जाता है कि प्राधिकारी का निष्कर्ष समान ही रहेगा, अर्थात् घरेलू उद्योग को क्षति होना जारी है।

27.3 हितबद्ध पक्षकारों ने प्रचालनात्मक कठिनाइयों और याचिकाकर्ता द्वारा प्रदूषण नियंत्रण उपायों में भारी अनावश्यक निवेश की ओर संकेत किया है। तथापि, याचिकाकर्ता ने इस बात की पुष्टि की है कि उसने उतनी मात्रा में प्रदूषण नियंत्रण उपाय नहीं किए हैं जैसा कि विरोधी पक्षकारों को ज्ञात है। घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया कि उन्होंने काफी कम निवेश की योजना बनाई है। यद्यपि पाटन के कारण कंपनी के अत्यधिक प्रतिकूल निष्पादन के चलते ऐसा छोटा निवेश भी कठिन हो गया है। घरेलू उद्योग ने दावा किया कि वे पाटन के कारण पूंजी निवेश जुटाने में समर्थ नहीं हैं और इससे घरेलू उद्योग को ऐसा नुकसान होने की संभावना है, जिसकी मरपाई करना संभव नहीं है।

27.4 विचाराधीन उत्पाद के आयात बर्तमान क्षति अवधि के दौरान समग्र रूप से काफी अधिक रहे हैं। आयातों में यह वृद्धि पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी के बावजूद हुई थी और यह वृद्धि लाभ में वृद्धि जिसके चलते आयात कीमतों में वृद्धि हुई है, के कारण प्रतीत होती है और इसके परिणामस्वरूप गैर पाटित/क्षति रहित कीमत पर आयातों को सुनिश्चित करने वाला बेंचमार्क कम प्रभावी हुआ है। आयात भारत में उत्पादन और खपत की दृष्टि से काफी अधिक रहे हैं। कीमत प्रभाव के संबंध में यह देखा जाता है कि आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में भारी कटौती हो रही थी और ऐसी कीमत वृद्धि में बाधा हो रही थी जो अन्यथा आयातों की गैर-मौजूदगी में बढ़ गई होती। घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में उत्पादन, क्षमता उपयोग, बाजार हिस्सा, बिक्री मात्राएं, बिक्री कीमत, लाभ, नकद लाभ और निवेश पर आय की दृष्टि से विकृति आई है। अतः प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि घरेलू उद्योग को लगातार वास्तविक क्षति हुई है।

28. कारणात्मक संबंध

28.1 क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

वर्तमान जांच एक समीक्षा जांच है और निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या शुल्क को हटाए जाने से पाटन और क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की आशंका है। इस मामले में यद्यपि गिरते हुए पाटित आयात जारी हैं, तथापि निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या शुल्क हटाए जाने से उत्पाद का पाटन जारी रहने की संभावना है। यद्यपि गिरावट की प्रवृत्ति है, तथापि संबद्ध देश से निर्यातक और उत्पादक पिछले अनेक वर्षों से भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात कर रहे हैं। वर्तमान पाटन मार्जिन काफी अधिक है। पूर्व में समाप्त हुई जांच में भी पाटन मार्जिन काफी अधिक था। ऐसी स्थिति में यह मानने का कोई कारण नहीं है कि शुल्क को हटाए जाने से पाटन में वृद्धि नहीं

होगी। यद्यपि पूर्ववर्ती पैराग्राफों में दिए गए आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि संबद्ध देश से आयातों की मात्रा में आधार वर्ष की तुलना में काफी कमी आई है। तथापि, जैसा कि ऊपर नोट किया गया है, चीन से होने वाले आयातों ने घरेलू बाजार की कीमतों में काफी कटौती की है। हितबद्ध पक्षकारों का तर्क इस दृष्टि से वास्तविक रूप से गलत है। इसके अलावा, यह तथ्य कि चीन से आयातों में गिरावट आई है, इस बात को सिद्ध नहीं करता है कि पाटन के जारी रहने और घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है। सर्वोत्तम रूप से यह सिद्ध करता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री मात्राओं में गिरावट के लिए पाटित आयातों को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। इस कारक पर भी घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि यदि चीन के उत्पादकों ने पाटन नहीं किया होता तो घरेलू उद्योग के पास अपनी सामग्री बेचने के लिए पर्याप्त बाजार उपलब्ध होता। घरेलू उद्योग के अनुसार इससे प्रतिकूल प्रभाव स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है। इसके अलावा और इससे अधिक महत्वपूर्ण यह बात है कि इस मामले में एक ओर आयात की पहुंच कीमत और दूसरी ओर घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और पहुंच कीमत के बीच भारी अंतर स्पष्ट रूप से यह सिद्ध करता है कि पाटनरोधी शुल्क को हटाए जाने की स्थिति में क्षति में और वृद्धि होगी। घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित मामलों में सेस्टेट के निर्णयों का हवाला दिया है, जिन पर वर्तमान प्रकटन विवरण में भी विचार किया गया।

- i) कल्याणी स्टील लिमिटेड 2006(203) ईएलटी 418.
- ii) इंडिया ग्रेफाइट मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन 2006(199) ईएलटी 722
- iii) फोरम ऑफ एक्रेलिक फाइबर मैनुफैक्चरर्स 2006(202) ईएलटी 257
- iv) जिन्दल स्टील लिमिटेड 2006(204) ईएलटी 267

चीन में संबद्ध वस्तु के भारी उत्पादन और उनके निर्यातों में होने और भारत में संबद्ध वस्तु की बढ़ती हुई मांग पर विचार करते हुए यह स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है कि यदि पाटनरोधी शुल्क में कोई कमी या उसे हटाया जाता है तो, उससे पाटित आयातों में भारी वृद्धि होने की आशंका है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति होगी

29. पाटन की संभावना

निर्णायक समीक्षा जांच में पाटन की संभावना की जांच करने के लिए प्राधिकारी उसी पद्धति और प्रक्रिया को अपनाते हैं जो मूल जांच में अपनाई गई थी। पाटन मार्जिन की भी जांच अवधि के लिए पुनः गणना की गई है।

29.1 संबद्ध वस्तुओं का काफी कम और पाटित कीमतों पर निर्यात किया जा रहा है। चीन के निर्यातकों ने पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भी पाटन करना जारी रखा है। इसके अलावा, वर्तमान शुल्क के बावजूद आयातों की मात्रा काफी अधिक रही है। इस प्रकार वर्तमान स्थिति स्पष्ट रूप से यह संकेत करती है कि (क) पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने की स्थिति में पाटन जारी

रहेगा; (ख) यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क हटाया जाता है तो मात्रा में और अधिक वृद्धि होगी। इस प्रकार पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने की स्थिति में पाटन के काफी अधिक अनुपात में जारी रहने की आशंका है। मूल जांच के समय प्रचलित मानदंडों/परिस्थितियों में और वर्तमान स्थितियों में कोई अंतर नहीं आया है। उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि पाटन मार्जिन न केवल निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है बल्कि काफी अधिक हैं। मूल जांच के समय प्रचलित स्थितियां वर्तमान अवधि में भी पूर्ण रूप से मौजूद हैं।

29.2 ऐसे कुछ विचार निम्नलिखित हैं, जो यह दर्शाते हैं कि यदि पाटनरोधी शुल्क हटाया जाता है या उसे आगे पांच वर्षों के लिए नहीं बढ़ाया जाता है तो पाटन के और अधिक उच्च स्तर पर होने की संभावना है।

क. अन्य देशों को निर्यात

चीन के निर्यातक भारी मात्राओं में तीसरे देशों में संबद्ध वस्तु का निर्यात कर रहे हैं। यह स्पष्ट है कि यदि पाटनरोधी शुल्क हटाया जाता है तो चीन की सामग्री का देश में पाटन और अधिक तेज होगा।

टाइटेनियम डाई ऑक्साइड (282300) के चीन के निर्यातों (मात्रा किग्रा. में) के शीर्ष 20 गंतव्यों की स्थिति निम्नानुसार है:

रैंक	शीर्ष 20 देश	अप्रैल 04- मार्च 05	अप्रैल 05- मार्च 06	अप्रैल 06- मार्च 07	अप्रैल 07- मार्च 08	अप्रैल 08- मार्च 09
0	--विश्व--	2,83,97,739	2,87,57,488	3,48,64,937	3,81,02,954	2,24,41,538
1	अमेरिका	22,42,077	14,41,620	13,75,675	19,94,998	33,13,245
2	जापान	41,77,155	25,80,738	35,42,242	45,02,728	24,48,249
3	भारत	14,89,000	30,32,175	68,65,250	44,76,350	21,54,150
4	स्पेन	3,40,000	15,85,000	15,49,000	68,45,500	20,97,525
5	दक्षिण कोरिया	33,34,725	35,87,100	45,61,140	44,14,852	15,44,998
6	थाइलैंड	18,05,000	17,57,500	27,44,840	22,57,000	15,23,345
7	इंडोनेशिया	3,26,800	9,40,000	16,46,500	13,33,500	11,98,625
8	हांगकांग	81,67,810	64,12,300	24,02,000	29,30,676	11,59,550
9	वियतनाम	3,97,600	7,73,925	13,48,110	11,57,530	10,80,520
10	बेल्जियम	1,38,000	4,40,000	6,10,800	4,98,100	6,93,600

	-					
11	तुर्की	65,000	64,000	6,87,200	5,21,775	6,89,000
12	नीदरलैंड	59,500	5,24,000	2,23,725	7,08,000	5,11,000
13	फ्रांस	4,14,000	3,94,100	5,10,300	6,01,850	4,66,250
14	ताइवान	8,40,960	8,27,175	9,24,610	5,92,975	4,55,005
15	ईरान	1,67,000	3,89,000	5,81,000	5,53,300	4,11,020
16	मलेशिया	4,29,000	5,84,000	6,77,000	5,55,510	4,02,425
17	इटली	22,000	1,20,075	7,82,000	14,71,300	3,75,800
18	ब्राजील	3,00,000	0	91,000	3,22,000	3,50,000
19	आस्ट्रेलिया	60,000	92,000	60,000	3,18,000	2,99,000
20	बंगलादेश	42,000	1,29,500	1,72,000	1,04,000	2,18,000

आंकड़ों का स्रोत: चायना कस्टम्स

कीमत निर्धारण की प्रवृत्ति

तीसरे देशों को कीमतें जो प्रति किय्रा. रूपए के रूप में व्यक्त हैं (जांच अवधि के लिए अम. डॉ.= 40.75 रूपए), निम्नानुसार हैं:

रैंक	देश	अप्रैल 04- मार्च 05	अप्रैल 05- मार्च 06	अप्रैल 06- मार्च 07	अप्रैल 07- मार्च 08	अप्रैल 08- मार्च 09
0	--विश्व--	-				
1	अमेरिका	79.46	59.56	92.77	107.41	224.12
2	जापान	218.16	148.59	258.41	286.60	210.11
3	भारत	59.43	124.73	305.47	237.52	126.54
4	स्पेन	13.01	54.29	60.62	332.10	149.05
5	दक्षिण कोरिया	143.31	158.68	216.16	253.36	106.50
6	थाइलैंड	72.88	75.35	128.69	130.72	101.59
7	इंडोनेशिया					

	-	13.36	40.75	74.04	76.33	76.23
8	हांगकांग	281.95	255.13	110.92	154.71	78.93
9	वियतनाम	12.12	26.10	58.63	65.80	74.15
10	बेल्जियम	5.77	19.38	31.29	29.37	45.26
11	तुर्की	2.48	2.93	31.31	25.55	48.24
12	नीदरलैंड	2.55	18.77	11.39	37.65	44.29
13	फ्रांस	15.26	15.41	23.08	31.04	35.74
14	ताइवान	31.96	40.47	46.53	36.92	27.51
15	ईरान	7.24	16.22	26.11	30.73	25.04
16	मलेशिया	17.49	25.74	30.62	32.14	28.58
17	इटली	0.64	4.68	31.41	71.11	19.81
18	ब्राजील	14.67	-	4.20	19.91	22.95
19	आस्ट्रेलिया	2.59	4.39	2.67	16.90	21.84
20	बंगलादेश	1.69	5.18	7.78	6.66	13.76

आंकड़ों का स्रोत: चायना कस्टम्स

ख. चीनी उत्पादकों के पास उपलब्ध क्षमताएं

चीन के उत्पादकों द्वारा सृजित क्षमताएं काफी अधिक हैं। चीन में टाइटेनियम डाई ऑक्साइड के 100 से अधिक उत्पादक हैं। चीन के उत्पादकों द्वारा तीसरे देशों के बाजारों में किए जा रहे निर्यातों की भारी मात्रा से यह स्पष्ट होता है कि पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने की स्थिति में भारत में आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि होगी। याचिकाकर्ता चीन में संबद्ध वस्तु के कुछ उत्पादकों के संबंध में सूचना एकत्र करने में सक्षम हुए हैं, जो निम्नलिखित स्थिति दर्शाती है :

क्र.सं.	कंपनी का नाम	क्षमता/उत्पादन(मी.ट.)
1	जियांगशू हांगयुआन फार्मक चीन जन.गण. टीकल कंपनी लि.	15,000
2	जियांगशू ताइबेई ग्रुप कार्पो.	50,000
3	शंघाई नानलिंग केमिकल प्रॉडक्ट्स कं. लि.	12,000
4	जियामेन प्रोफाउण्डर इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कं. लि.	30,000
5	जियांगशू झेन्ताई केमिकल कं. लि.	50,000
6	मानशान गोल्डस्टार केमिकल इंडस्ट्रियल (ग्रुप)	2000
	कुल	159,000

ग). चीन के कुछ उत्पादकों के संबंध में उपर्युक्त सूचना से यह देखा जा सकता है कि चीन के उत्पादकों के पास काफी अधिक क्षमताएं हैं। ऐसे मामले में इस बात की प्रबल संभावना है कि शुल्क को हटाए जाने से आयातों में उछाल आएगा और घरेलू उद्योग को भारी क्षति होगी। चीन में मौजूद क्षमता (कुछेक उत्पादकों के लिए 50,000 मी.ट. से अधिक) क्षमता की तुलना में भारत में लगभग 38000-40000 मी.ट. की काफी कम मांग को देखते हुए, इस बात पर कोई संदेह नहीं है कि चीन के पाटन द्वारा, यदि इसकी अनुमति दी जाती है तो, घरेलू उद्योग पूर्णतः समाप्त हो सकता है।

घ). मै. बर्जर पेंट्स लि. और मै. कंसाई नेरोलैक पेंट्स लि. के प्रतिनिधियों ने तर्क दिया है कि अधिशेष क्षमता संबंधी आंकड़े अनन्य रूप से TiO_2 अनाटेज ग्रेड की उत्पादन क्षमता से संबंधित नहीं हैं, तथापि आयातकों ने अपने दावे को साबित करने के लिए कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई है। अतः प्राधिकारी घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना को सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना मानते हैं।

ड). पूर्वोक्त के अनुसार यह स्पष्ट है कि चीन के उत्पादकों के पास टाइटेनियम डाई आक्साइड की विशाल क्षमताएं मौजूद हैं और वे तीसरे देशों को भारी मात्रा में निर्यात कर रहे हैं। भारत को भी निर्यात किए जा रहे हैं और घरेलू उद्योग को चीन से संबद्ध वस्तु के लगातार पाटन का सामना करना पड़ रहा है। तथापि, यह मानने का कोई कारण या न्यायसंगत आधार नहीं है कि शुल्क को हटाए जाने से पाटन में काफी अधिक वृद्धि होने या लगातार पाटन होने से घरेलू उद्योग को अत्यधिक परिणामी क्षतिकारी प्रभाव नहीं झेलना पड़ेगा।

30. वर्तमान क्षति और कारणात्मक संबंध

30.1. अधिनियम के अनुच्छेद 3.1 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में इन दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच की व्यवस्था है, (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव। पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा आयातक देश में समान उत्पादों की कीमतों की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी करना है या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी मात्रा में बढ़ गई होती।

छ. अन्य ज्ञात कारक और कारणात्मक संबंध

31. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों के आलोक में और संबंधित नियमों को ध्यान में रखते हुए पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की मौजूदगी की जांच की है।

(क) अन्य ज्ञात सूचीबद्ध मानदंडों का प्रभाव

प्राधिकारी ने कारणात्मक संबंध और नियमों के अनुसार अन्य गैर-जिम्मेदार कारकों की जांच की है ताकि ऐसी किसी क्षति, यदि कोई हो, को अलग किया जा सके जो अन्य कारकों द्वारा हुई है। इस संबंध में, नियमों में यथाउल्लिखित निम्नलिखित संकेतात्मक कारकों की जांच की गई है।

31.1 उन आयातों की मात्रा और कीमतें जिन्हें पाटित कीमतों पर नहीं बेचा गया है

प्राधिकारी यह देखते हैं कि यद्यपि जांच अवधि के दौरान अन्य देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयात हुए हैं, तथापि उनकी आयात कीमतें जैसा कि उपर्युक्त पैरा 19 (iv) से स्पष्ट है, घरेलू उद्योग की कीमतों से अधिक रहीं थीं और इसलिए घरेलू उद्योग की कीमतों में कोई कटौती नहीं हुई है। इस प्रकार प्राधिकारी यह समुक्ति करते हैं कि चीन से पाटित आयातों का कीमत प्रभाव काफी अधिक रहा है।

(ख) व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं और विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

प्राधिकारी को घरेलू उद्योग और अन्य भारतीय उत्पादकों द्वारा अपनाई गई किसी व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रिया की जानकारी नहीं मिली है। प्राधिकारी ने यह देखा है कि संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रिया नहीं है। इसके अलावा, आयातों की पहुंच कीमत में क्षति अवधि के दौरान काफी अधिक गिरावट आई है। ऐसी स्थिति में जबकि आयातों की कीमतें भारतीय उत्पादकों की बिक्री कीमत से काफी कम हैं, यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि कीमत में कटौती घरेलू उत्पादकों द्वारा शुरू की गई है।

(ग) मांग में संकुचन या खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन

विचाराधीन अवधि के दौरान समग्र मांग में कोई कमी नहीं हुई है। अतः मांग में कोई संभावित गिरावट ऐसा कारक नहीं है, जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो। खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा कोई तर्क नहीं दिया गया है और न ही ऐसा प्रतीत होता है कि खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन से घरेलू उद्योग को कोई क्षति हो सकती हो।

(घ) निर्यात निष्पादन

घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्रियों में गिरावट आई है। तथापि, घरेलू बिक्रियों से संबंधित आंकड़ों की पृथक रूप से जांच की गई है। अतः निर्यातों में गिरावट घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संभावित कारण नहीं है।

विवरण	इकाई	2004-05	2005-06	2006-07	जांच अवधि
निर्यात बिक्री	मी.ट.	785	5,464	-	25

(ड) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

उत्पादन में गिरावट के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की उत्पादकता में गिरावट आई है ।

(च) पूर्वोक्त के अनुसार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अन्य कारकों के कारण हुई क्षति का कोई साक्ष्य नहीं है ।

(छ) समग्र आकलन

32. क्षति और कारणात्मक संबंध से संबंधित विभिन्न कारकों के उपर्युक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि क्षति अवधि के दौरान कुछेक मानदंडों में सुधार के बावजूद घरेलू उद्योग के निष्पादन में वास्तविक रूप से विकृति आई है और उद्योग को बिक्री मात्राओं, क्षमता उपयोग, बाजार हिस्सा, लाभप्रदता, नकद प्रवाह और निवेश पर आय की दृष्टि से क्षति उठानी पड़ी है जबकि घरेलू बाजार में उत्पाद की पर्याप्त मांग थी । उठाई गई क्षति वास्तविक और काफी अधिक है । अतः प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति उठानी पड़ी है और यह क्षति चीन जन.गण. से हुए पाटित आयातों के कीमत और मात्रात्मक प्रभाव द्वारा हुई है । अन्य कारकों के कारण हुई क्षति, यदि कोई हो, कोई खास नहीं है ।

33. क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

ऐसी स्थिति में जबकि पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने पर पाटन के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है और जहां यदि पाटनरोधी शुल्क हटाया जाता है तो घरेलू उद्योग को क्षति होना जारी रहने या घरेलू उद्योग को क्षति होने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है, वहां पर लागू पाटनरोधी शुल्क को अगले पांच वर्षों की अवधि के लिए जारी रखना चाहिए । वर्तमान मामले में चीन से इस उत्पाद का पाटन जारी रहा है । यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क को हटाया जाता है तो चीन से पाटन में और तेजी आ जाएगी ।

33.1 प्रकटन विवरण के संबंध में की गई टिप्पणियां

(क) आयातकों द्वारा

33.1.1 विचाराधीन उत्पाद के आयातों पर देय बेंचमार्क शुल्क को स्थिर राशि में नहीं बदला जाना चाहिए क्योंकि :

(क) कोई पाटन नहीं हुआ है

(ख) पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है, इस उद्देश्य को बैचमार्क शुल्क लगाकर हासिल कर लिया गया है ।

(ख) घरेलू उद्योग द्वारा

33.1.2 संबद्ध देश से हुए आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क को जारी रखना अपेक्षित है और शुल्क की स्थिर राशि जिसे अमरीकी डॉलर में व्यक्त किया गया हो, की सिफारिश की जाए ।

33.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

(क) प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच से यह पता चला है कि पाटित कीमतों पर लगातार आयात हुए हैं और घरेलू उद्योग को क्षति होना जारी है । चूंकि संबद्ध उत्पाद की पहुंच कीमत में कोई खास उतार-चढ़ाव नहीं हुआ है, इसलिए प्राधिकारी यह मानते हैं कि स्थिर रूप से निश्चयात्मक शुल्क लागू करने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

ज. अंतिम जांच परिणाम:

34. उठाए गए मुद्दों, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदत्त सूचना और किए गए अनुरोधों तथा हितबद्ध पक्षकारों द्वारा कए गए अनुरोधों के जरिए प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों या उपर्युक्त जांच में अन्यथा रिकॉर्ड किए गए तथ्यों और वर्तमान तथा संभावित पाटन एवं क्षति की स्थिति और पाटन तथा क्षति के जारी रहने अथवा उनकी पुनरावृत्ति के उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि:

i) संबद्ध वस्तुएं पाटित कीमतों पर भारतीय बाजार में प्रवेश कर रही हैं और पाटन मार्जिन उल्लेखनीय तथा न्यूनतम से अधिक है ।

ii) यदि वर्तमान उपायों को हटाया जाता है तो संबद्ध वस्तुओं के बढ़ी हुई मात्रा और पाटित कीमतों पर भारतीय बाजार में प्रवेश करने की आशंका है ।

iii) घरेलू उद्योग के निष्पादन में वास्तविक रूप से विकृति आई है और उद्योग को बिक्री मात्राओं, क्षमता उपयोग, बाजार हिस्सा, लाभप्रदता, नकद प्रवाह और निवेश पर आय की दृष्टि से क्षति उठानी पड़ी है जबकि घरेलू बाजार में उत्पाद की पर्याप्त मांग थी । घरेलू उद्योग की स्थिति अब भी संबद्ध देश द्वारा संबद्ध वस्तु के लगातार पाटन के कारण नाजुक बनी हुई है । पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति के जारी रहने या उसके और अधिक होने की संभावना है ।

झ भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे

35. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से भारत में उत्पाद के कीमत स्तरों पर प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कोई कमी नहीं आएगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन की प्रक्रिया द्वारा हासिल अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का ह्रास रूकेगा और उपभोक्ताओं को संबद्ध वस्तु के व्यापक विकल्प उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देश से होने वाले आयात किसी भी तरह से प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए इससे उपभोक्ताओं को उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। उपभोक्ता अब भी आपूर्ति के दो या उससे अधिक स्रोत रख सकते हैं।

36. पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य आम तौर पर पाटन के अनुचित व्यापार क्रियाकलापों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल की जा सके जो देश के सामान्य हित में है। अतः पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

37. घरेलू उद्योग ने वर्तमान पाटनरोधी शुल्क को बेंचमार्क रूप से निर्धारित रूप में परिवर्तित करने, जिसे अम.डॉ. में व्यक्त किया जा सके, के संबंध में अभ्यावेदन प्रस्तुत किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान कच्चे माल की कीमतों में अत्यधिक घट-बढ़ हुई है। अतः उपाय के स्वरूप को पाटनरोधी शुल्क की अम.डॉ. में व्यक्त निर्धारित राशि में संशोधित करना उपयुक्त समझा गया है।

ज. सिफारिशें

38 इस निष्कर्ष पर पहुंचने के बाद कि घरेलू उद्योग की स्थिति नाजुक बनी हुई और यदि शुल्क हटाया जाता है तो संबद्ध देश से पाटन के कारण पाटन और क्षति के जारी रहने और उसके तेज होने की संभावना है, प्राधिकारी की यह राय है कि दिनांक 15 मार्च, 2004 की अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना सं. 14/51/2002-डीजीएडी जिसे 16 मार्च, 2004 को भारत के राजपत्र, असाधारण, भाग-1, खंड-1 में प्रकाशित किया गया था और केन्द्र सरकार द्वारा दिनांक 9 अप्रैल, 2004 की अधिसूचना सं. 54/2004-सी.शु. द्वारा अधिसूचित किया गया था, के माध्यम से प्राधिकारी द्वारा यथा अनुशंसित संबद्ध देशों से आयातों के संबंध में लागू किए गए उपाय की अवधि को बढ़ाया जाना अपेक्षित है

39 इस बात की जांच करने के बाद कि वर्तमान में लागू उपायों को हटाए जाने की स्थिति में वर्तमान पाटन और पाटन की संभावना सन्निकट है और चूंकि संबद्ध देश से किसी भी निर्यातक ने सहयोग नहीं किया है और अपेक्षित सूचना/आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए हैं, प्राधिकारी चीन जन.गण. के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के संबंध में सभी निर्यातकों/उत्पादकों पर निम्नांकित तालिका के अनुसार आगे 5 वर्ष की अवधि के लिए पाटनरोधी शुल्क को लागू रखने की सिफारिश करते हैं। पाटनरोधी शुल्क निम्नांकित तालिका के कॉलम 9 में उल्लिखित राशि और आयातित उत्पाद जो संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित हैं और सीमाशुल्क टैरिफ के अध्याय 28 और/या 32 के अंतर्गत आते हैं, के आयातों के पहुंच मूल्य के बीच के अंतर के बराबर होगा जो निम्नानुसार है :-

क्र.सं.	सीमा शुल्क संदर्भ	विवरण	विनिर्देशन	उत्पाद का देश	निर्माता का देश	अवकाश	नियमित	सीमा शुल्क प्रति	उत्पाद शुल्क	टिप्पणी
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	28 23 और/अथवा 32 06	टाइनेनियम डाइऑक्साइड	अनाटेज	चीन.जन. गण.	चीन	कोई	कोई	1735.47	प्रति मी.ट.	अम.डॉ.
2	28 23 और/अथवा 32 06	टाइनेनियम डाइऑक्साइड	अनाटेज	चीन.जन. गण.	कोई	कोई	कोई	1735.47	प्रति मी.ट.	अम.डॉ.
2	28 23 और/अथवा 32 06	टाइनेनियम डाइऑक्साइड	अनाटेज	चीन.जन. गण. से इतर अन्य कोई	चीन	कोई	कोई	1735.47	प्रति मी.ट.	अम.डॉ.

40. केन्द्रीय सरकार के आदेशों, जो इस सिफारिश से उत्पन्न होते हों, के विरुद्ध कोई अपील, उक्त अधिनियम के संबंधित प्रावधानों के अनुसरण में सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 3rd July, 2009

FINAL FINDINGS

Subject: Anti-dumping Sunset Review Investigations concerning imports of Titanium Dioxide originating in or exported from China PR.

No. 15/5/2008-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty or Additional Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as Rules);

A. BACKGROUND OF THE CASE

Whereas the Designated Authority, having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, initiated the original investigation vide Notification No. 14/51/2002-DGAD dated 16th January, 2003. The Authority issued its Final findings recommending imposition of definitive Anti Dumping Duty on imports of Titanium dioxide (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from China PR (hereinafter referred as subject country), vide Notification No. 14/51/2002-DGAD dated 15th March, 2004 and such definitive duty was imposed by the Govt. of India vide Customs Notification No. 54/2004 dated 09.04.2004.

2. The Designated Authority, in terms of section 9A (5) of said Act. received a duly substantiated application from *M/s. Travancore Titanium Products Ltd.* requesting for review and continuation of the anti-dumping duties levied on the subject goods from subject country as the domestic industry continued to suffer injury on account of dumping by the subject country. The request was based on the grounds that the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry. The petitioner had claimed with prima facie evidence in this regard and had requested for the imposition of the anti dumping duty on subject goods from the subject country.

3. Having satisfied on the basis of positive evidence submitted by the domestic industry substantiating the need for a review, the Designated Authority issued a Public Notice No. 15/5/2008-DGAD dated 5th July, 2008 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating sunset Review of the anti-dumping investigations to review the need for continued imposition of duties in force and whether the expiry of the duty would likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury.

B. PROCEDURE

4. In these proceedings the procedure described below has been followed:

- (i) The Authority notified the Embassy/Representatives of the China PR in India about the receipt of application made by the petitioner before initiating the investigation in accordance with sub-Rule (5) of Rule 5 supra.
- (ii) The Embassy/Representatives of the subject country in New Delhi were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2).
- (iii) The Designated Authority sent copies of initiation notification dated 5th July, 2008 to the Embassy/Representatives of the subject country in India, known exporters from the subject country, known importers and other interested parties, and the domestic industry, as per the information available with it. Parties to this investigation were requested to file questionnaire responses and make their views known in writing within prescribed time limit. Copies of the letter, petition and questionnaire sent to the exporter were also sent to the Embassy of subject country along with a list of known exporters/ producers with a request to advise the exporters/producers from the subject country to respond to the questionnaire within the prescribed time.
- (iv) Copy of the non-confidential version of the petition filed by the domestic industry was made available to the known exporters and the Embassy of the subject country in accordance with Rules 6(3) supra.
- (v) Questionnaires were sent to the following known exporters from subject country in accordance with the rule 6(4) to elicit relevant information:
 1. M/s. Guangxi Dahua Chemical Factory ,China.
 2. M/s Guang Xi Xing Mei Xiang Titanium Dioxide Co Ltd, China;
 3. M/s Guang Cang Wu Titanium Manufacturing Co Ltd, China;
 4. M/s Shaugan Chemical plant , China;
 5. Maanshan Goldstar Chemical(Group)
 6. Jiaozuo City Chemical General Plant
 7. Zhuzhou Chemical Group Co. Ltd.
 8. Pingui Mineral Bureau
 9. Titanium White Plant Pinguui Feidiie Corp.
 10. Chongqing Xinhua Chemical Energy
 11. Iangaxi Gandong Chemical Co. Ltd.
 12. Shaogum City Chemical Plant
 13. Basis City Huahong Titanium White Plant
 14. Titanium Industry Co. of panzhihua Iron
 15. Titanium White Branch of Shanghai
 16. Anhui GuSheng Import & Export Co. Ltd.

17. Anhui Huishang International Co. Ltd.
 18. Jiangsu Hongyuan Pharmaceutical Co. Ltd.
 19. Chongqing Xinhua Chemical Energy Factory
- (vi) Only one exporter namely M/s Cangwu Shunfeng Titanium Dioxide co. Ltd, Cangwu Guangxi, China submitted their response after four months of the stipulated timelines which was rejected being time barred totally deficient as requisite information as required in the exporters Questionnaire was not provided. No response has been filed by any other exporters to the above notification.
- (vii) Questionnaire was sent to the following known importers and Consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4):
1. Chemi Care
 2. Crystal India
 3. Popawala & Co.
 4. Kantilal Sanghvi & Co.
 5. Associated Industries
 6. Chitaal Chemicals ltd.
 7. Goodless Nerolack Paintsd.
 8. Chemi Enterprises/Mulatic & Co.
 9. G.C. International
 10. Pure Chemical Co/PonPure Chem(P) Ltd.
 11. KPL International Limited
 12. Amrit Chem.
 13. Chemtic Enterprises
 14. Snowcem India Ltd.

M/s Kansai Nerolac paints Ltd and M/s Berger Paints India Ltd has submitted the information regarding imports made by them which have been taken into account. No response has been filed by any other interested parties.

- (viii) Transaction-wise data of imports for the period of investigation and preceding three years were called from Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) in addition to the IBIS data provided by the domestic industry. The product under consideration Titanium Dioxide Anatase type is classified under Chapter 28 under Sub-heading 28230010. The original investigation has established that substantial volumes of imports are made under Chapter 32 also. The Authority considered imports under Chapter 28 and Chapter 32 in the previous investigations. Imports data available shows continued imports under Chapter 32. The information provided by DGC&IS contained imports of Anantase grade and Rutile grade from China and other countries. The product under consideration being Anatase, the imports for Anatase grade only have been considered for the purpose of this investigation. The data provided by DGC&IS have been relied upon for the purpose of this investigation.

- (ix) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- (x) M/s. Travancore Titanium Products Ltd. being domestic industry, submitted the information/data. The Authority verified the information furnished by the domestic industry to the extent possible on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) to examine the injury suffered, to work out optimum cost of production, cost to make and sell the subject goods in India and so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to domestic industry. It was noted that the company has not yet completed statutory audit of its accounts for the year 2007-08. However, the company has maintained all statutory books of accounts. Since information relied upon is from the books of accounts, the Authority has adopted the information verified from the books of accounts maintained by the company. The Authority has relied upon information provided by the opposing interested parties with regard to performance of the supporting company namely M/s Kilburn Chemicals.
- (xi) The Authority held a public hearing on 05.06.2009 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of interested parties. The arguments rose in the written submissions/ rejoinders received from interested parties have been considered, wherever found relevant, in this findings;
- (xii) Investigation was carried out for the period starting from 1.04.2007 to 31.3.2008 (POI) and the Injury analysis has been done for the period 2004-05, 2005-06 and 2006-07.
- (xiii) The Authority has considered all views expressed and submissions made by various interested parties to the extent they are relevant for the present investigation.
- (xiv) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- (xv) In accordance with Rule 16 of the anti-dumping Rules, the Authority had issued a detailed disclosure statement on 19th June, 2009 giving thereby essential facts under consideration and views expressed thereon have been duly incorporated in the present final findings.
- (xvi) Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has granted confidentiality, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- (xvii) Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigations, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded these findings on the basis of the facts available.
- (xviii) *** in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the authority under the Rules.

4.1 Comments to the Disclosure statement by importers.

- i) DGCI&S data is conspicuously absent from the public file maintained by the DGAD.

- ii) The annual report for the 2007-08 has not been supplied. We have been informed that the annual report for the year 2007-08 is yet to be audited.

4.2 Examination by the authority

The authority notes that the import data of DGC&IS contains sensitive information about names of importers/ quantity/ prices etc, hence not put in the public file. Further, the authority notes that the disclosure statement confirmed that the company has not yet completed statutory audit of its accounts for the year 2007-08.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND 'LIKE ARTICLE'

5. The product involved in the original investigation was Titanium dioxide Anatase grade (also referred to as subject goods). The product was defined in the original investigations as follows:

"The product under consideration in the present investigation is Titanium Dioxide Anatase grade, having chemical formula TiO_2 . Titanium Dioxide can be used in Anatase form or Rutile form. However, the present investigation is against Titanium Dioxide in Anatase form only. Titanium Dioxide (TiO_2) occurs commonly in oxide form. Properties of the subject goods are described in terms of refractory index, specific gravity, hardness, crystal structure, oil absorption, colour, hiding power, ultra violet light absorption, resistance to chalking, etc. It is a pigment and is primarily used in the manufacturing of paints, plastics, paper, ink, rubber etc. Titanium Dioxide (Anatase) has a very high degree of whiteness. Its tinting strength and hiding power are superior to any other white pigment and it also has stability & durability against light and heat. It is not toxic."

6. The product under consideration Titanium Dioxide Anatase type is classified under Chapter 28 under Sub-heading 28230010. The original investigation has established that substantial volumes of imports are made under Chapter 32 also. The Authority considered imports under Chapter 28 and Chapter 32 in the previous investigations. Imports data available to the domestic industry shows continued imports under Chapter 32. In view of the same, the Authority has considered imports in both the Chapters for the purpose of the present investigations, as per the information provided by DGC&IS in this regard.

7. **Submissions made by the Interested Parties**

- 7.1 The Domestic Industry has represented as follows with regard to product under consideration and like article:

(i) The applicant has claimed that there is no known difference between the product manufactured by them and the subject goods imported from the subject country, which can have any impact on price, usage, quality etc. The applicant also claims that the technology and primary production process employed by them and the foreign producers are comparable; however, producers fine-tune their production process based on available facilities and necessities.

7.2 Views of the importers, consumers, exporters and other interested parties.

None of the exporters, importers, consumers and other interested parties has disputed with regard to the nature of the subject goods that are exported to India from the subject country and those being manufactured by the domestic industry.

Examination by the Authority.

7.3 The product under consideration Titanium Dioxide Anatase type is classified under Chapter 28 under Sub-heading 28 23 00 10. However, the product under consideration, that is, Titanium dioxide Anatase type is also being imported reportedly under Chapter 32. It has also been held by the Authority in the final findings of the original case that substantial volumes of imports have been made under Chapter 32 also. In the circumstances, the Authority has considered imports volume as reported by DGC&IS under Chapter 28 & 32 with respect to Titanium Dioxide, Anatase type for the purpose of this investigation.

7.4 The product under consideration produced by the Indian industry and imported from the subject country are comparable in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, pricing, distribution and marketing and tariff classification of the goods. In view of the similarity in manufacturing process and substitutability, the Authority therefore holds that the two are required to be treated as alike and one product for the purpose of defining the 'product under consideration' as per Rule 2(d) of Anti-Dumping Rules.

8. D. Standing and scope of the Domestic Industry

8.1 In the original investigations, the Titanium Dioxide Manufacturer's Association had filed the petition before the Designated Authority on behalf of producers of Titanium dioxide in India. In the original investigation, there were three producers of the product under consideration in India. In the Sunset review investigation, M/s. Travancore Titanium Products Ltd. has filed the petition on behalf of domestic industry. The petition has been supported by M/s. Kilburn Chemicals Ltd. The domestic industry has claimed that another producer namely M/s Kolmak Chemicals Ltd. has closed down. The petitioner, thus, constitutes domestic industry within the meaning of the Anti Dumping Rules. However, it has also been claimed by the petitioner that there is no need to prove the standing in a sunset review investigation under Rule 23.

8.2 Views of the Domestic Industry

- (i). The petition for imposition of anti dumping duty was filed *M/s. Travancore Titanium Products Ltd.*
- (ii) Production of the petitioner constitutes a major proportion of total Indian production. The petition has been supported by M/s. Kilburn Chemicals Ltd. The domestic producers expressly supporting the application account for more than 50 per cent of the total production of the like product produced by the domestic industry. Thus, petitioner accounts for "a major proportion in total eligible Indian production". and constitutes "domestic industry" within the meaning of the Rules.

Views of the Importers, Consumers, Exporters and Other Interested parties

8.3 At the time of oral hearing and subsequently in the comments to the disclosure statement, following issues were raised by the importers—

- (a) Petitioner does not satisfy standing under Rule 5;
- (b) Petitioner does not constitute domestic industry under the Rules;
- (c) Following the Supreme Court judgment, the Authority must collect information from all domestic producers.
- (d) Rule 2 (b) clearly stipulates that any petition for imposition of anti dumping duty must be initiated by a major producer of the industry. In the instant case this requirement has clearly not been fulfilled as TTPL does not constitute as major producer as it only holds 48.7 % of the market share while majority share of 51 % is held by KCL who has only supported the petition. It is humbly submitted that support from a major producer to any petition for imposition of anti dumping duty cannot be deemed to qualify as fulfilment of Rule 2 (b) of the Antidumping Rules. Hence, the petitioner herein cannot be termed as the domestic industry for the purpose of Rule 2 (b) of the Antidumping Rules and the said petition is liable to be dismissed as it is not maintainable before the Designated Authority.
- (e) Hence, the instant petition cannot be deemed as a comprehensive document for the purpose of determining injury, as the data provided exclusively related only to Travancore Titanium Products Ltd. and cannot be relied upon solely for analysis by the DGAD. It is humbly submitted that data relating exclusively to one producer cannot be termed as illustrative for an entire industry. Hence, the instant petition suffers from insufficiency of data and should be rightfully dismissed by the Hon'ble DGAD.

8.4 **Examination by the Designated Authority**

- i) The Authority has examined submissions made by various interested parties and has appropriately dealt with the same in the present findings. The Authority holds that the present investigation is a sunset review investigation conducted to ascertain whether anti dumping duties imposed earlier is required to be extended further. Rule 5 of the Anti-dumping Rules, applicable to fresh investigations, is not applicable in case of sunset reviews. It is also noted that the Hon'ble High Court of Delhi has held that sunset review investigation is mandatory on the part of the Authority. Even if there is no application, the Authority is to conduct sunset review. Further, it is observed that the share of petitioner along with supporter is more than the limits prescribed under Rule 5.
- ii) After taking into account the production of all the known producers of the subject goods in the Country, the Authority observed that there are two other companies, which are known to have created capacities to produce the subject goods in India i.e. M/s. Kilburn Chemicals Limited and M/s. Kolmak Chemicals Limited. No information in respect of M/s Kolmak could be made available. The Authority has assessed the production volumes of remaining producers and their support and opposition to the petition. M/s. Kilburn Chemicals has supported the petition. The company has however not provided

any information. In view of non cooperation by the company, the Authority has relied upon information provided by the opposing interested parties with regard to performance of the company. Therefore, the Authority holds that for the purpose of this investigation, the petitioner constitutes domestic industry within the meaning of the Anti Dumping Rules. However, it has also been claimed by the petitioner that there is no need to prove the standing in a sunset review investigation under Rule 23. The arguments raised by interested parties with regard to performance of Kilburn Chemicals have been appropriately dealt in the causal link section.

E. Dumping Determination

9 Determination of normal value

9.1 Views of the Importers, Consumers, Exporters and Other Interested parties:

- i) It is humbly submitted that the petition is replete with insufficient information. The petitioners vide Annexure 3.2 of the petition are computing market value by taking prevailing international prices as the price of raw material. It is submitted that the petitioners have presupposed that prevailing international prices shall be true reflection of Chinese prices. Secondly, without prejudice to same, it is added that the petition does not disclose the said international prices of sulphur or the source from where these prices have been accessed. Similarly the normal value has been inflated by taking the domestic industry's price for power, utilities and furnace oil instead of a more objective basis for these costs. The domestic industry must be compelled to reveal the source from where data is gathered. It is submitted before the Hon'ble DGAD that all interested parties must be provided with opportunity to argue the authenticity of the data supplied by the petitioners.
- ii) It is further pleaded that the domestic industry must also be compelled to reveal the data relating to export price. It is humbly submitted that Annexure 3.3 of the petition only contains the net export however essential details such as Freight, Cost, and Insurance have not been supplied. The importers must be allowed access to relevant information, so as present an informed argument before the DGAD. Such non disclosures practically negates the rights of interested parties to present submissions for due consideration before the DGAD.

9.2 Views of the Domestic Industry

- i) The petitioner has claimed China as non-market economy. Petitioner submits that unless the responding Chinese exporters conform to these standards, the Designated Authority is required to determine normal value in accordance with Para 7 of Annexure-I to the Rules.

According to these Rules, the normal value in China can be determined on any of the following basis:

- (a) the price in a market economy third country,
- (b) constructed value in a market economy third country,

- (c) the price from such a third country to other country, including India.
- (d) the price actually paid in India, adjusted to include a reasonable profit margin.
- (e) the price actually payable in India, adjusted to include a reasonable profit margin.
- (ii) Normal value must be "comparable price in the ordinary course of trade for the like article when meant for consumption in such market economy third country". In order to arrive at normal value on this basis, the complete & exhaustive verifiable information on all domestic sales made by a co-operating producer in such third country, along with its cost of production and all other associated information and evidences (including all information in the ordinary course of trade) are required. However, no exporter has cooperated or furnished information in this respect.

9.3 In view of the above, the petitioner could not consider price from such third countries to other countries for the reasons (a) information is not available; (b) the price so adopted must be a price in the ordinary course of trade; (c) such information would also require cooperation from a producer in such third country.

9.4 The petitioner submits that India is an appropriate surrogate country for Chinese producers. Not only consideration of India as a surrogate country would result in access to accurate and adequate information, there is no factual basis to consider that India would not be a proper surrogate country. India has been considered as an appropriate surrogate by other Investigating Authorities too.

9.5 As the normal value in China can be determined on any of the above-mentioned basis, the normal value in China can thus be determined on the basis of (a) price in India, and (b) cost of production in India, duly adjusted, including selling, general and administrative expenses and profit. The petitioner has, therefore, constructed the normal value for the subject country based on the information available for the domestic industry.

9.6 Comments to the disclosure statement by Importers.

- i) Normal value has been wrongly constructed on the basis of cost of production in India including selling, general and administrative expenses and profits provided by TTPL. The constituents employed by the DA for the computation of normal value be disclosed to the importers.
- ii) The view that the weighted average landed price of imports from China is in the similar range of the information provided by the importers is incorrect.

9.7 **Examination by the Authority**

- a) None of the exporters have responded to the questionnaire. In the absence of relevant information from Chinese producers, the Authority has constructed the normal value based on facts available by adopting the cost of production in India, duly adjusted, including selling, general and administrative expenses and profit. It is further mentioned that while cost of production of TTPL has been adopted, the same has been

appropriately adjusted with regard to possible high wage costs which TTPL might have incurred. Even though the normal value has been moderate, substantially on this account, it is relevant to point out that the authority had not been offered options in the fact and circumstance of the present case as to while disputing the determination of normal value, the interested parties has failed to provide any other alternate basis of which normal value can be constructed.

- b) The Authority notes the concern of interested parties that methodology for determination of normal value was not adequately explained in the petition. The Authority, however, adequately disclosed the methodology in the disclosure statement issued earlier as well as the present findings. It is however observed that the elements of costs & expenses could not have been disclosed, given that the company constitutes confidential business sensitive information of the domestic industry.
- c) The position in respect of landed value (weighted average) comparison with those of importers (based on DGC&IS data) is as follows:

Particulars	Unit	POI
Volume	MT	5,372
Value (Assessable Value)	Rs. Lacs	2,684.29
Export Price (Assessable Value)	Rs./MT	50,470
CIF Export Price	Rs./MT	49,971
Customs Duty - Basic	%	10
Customs Duty Amount - Basic	Rs./MT	5,047
Landed Price of imported Product	Rs./MT	55,018

The weighted average landed value based on the information submitted by the importers is Rs 60.60 per kg.

E.1 EXPORT PRICE

9.8 With regard to export price, the Authority observed that none of the exporters has cooperated. The information provided by importers M/s Kansai Nerolac shows an import of *** MT at the landed price of Rs ***per kg and that of M/s Berger shows an import of ***Mt at Rs ***per kg. The weighted average landed price of imports from China, as per

DGC&IS data for the POI, comes to Rs 54.97 per kg. This is almost in the similar range of the information provided by the importers and has been adopted. The export price is therefore, determined on the basis of information provided by DGC&IS. In absence of any other information provided by any other interested party, the following adjustments, as provided by the petitioners, have been taken in to account to arrive at the net export price: -

- (a) Ocean freight @ US\$ 60.41 pmt
- (b) Marine insurance @ 0.05% of CIF value
- (c) Commission @ 1% of FOB value
- (d) Port expenses @ 1% of FOB value
- (e) Inland freight @ 1% of FOB value
- (f) Bank commission @ 0.05% of FOB value

E.2 Dumping Margin

9.9 On the basis of normal value and net export price determined, as explained above, at ex-factory level, the dumping margin during POI for all exporters is as per table below:

China	US\$ per MT
Normal value	***
Net Export price	***
Dumping margin amount US \$	***
Dumping margin %	33.02

F. INJURY AND CAUSAL LINK DETERMINATION

10. The petition is for review, continuance and enhancement of anti dumping duty in force for further period of five years in view of continued dumping and injury or likelihood of dumping and injury.

10.1 According to Section 9(A)(5) of the Customs Tariff Act, anti dumping duty imposed shall, unless revoked earlier, cease to have effect on the expiry of five years from the date of such imposition, provided that if the Central Government, in a review, is of the opinion that the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury, it may, from time to time, extend the period of such imposition for a further period of five years and such further period shall commence from the date of order of such extension.

10.2 It is clear from the above that the duty imposed earlier should remain in force for a period of five years from the date of its imposition. However, in a situation where the dumping continues or is likely to recur in the event of revocation of anti dumping duty and where the domestic industry continues to be injured or the injury to the domestic industry is likely to recur in the event of revocation of anti dumping duty, the anti dumping duty in force should be continued further for a period of five years.

10.3 Article 3.1 of the WTO Agreement and Annexure-II of the Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the

dumped imports on prices, in the domestic market, for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

11. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry para (iv) of Annexure-II of the Anti Dumping Rules states as follows.

“The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping, actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.”

12. The Authority has taken note of the arguments of the interested parties on injury examination and addressed the issues raised at appropriate places. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and the arguments of the interested parties.

F.1 Views of the Domestic Industry

13. The domestic industry has submitted the following to claim that they have suffered material injury as a result of dumping from the China PR:

13.1. In a situation where the dumping continues or is likely to recur in the event of revocation of anti dumping duty and where the domestic industry continues to be injured or the injury to the domestic industry is likely to recur in the event of revocation of anti dumping duty, the anti dumping duty in force should be continued further for a period of five years. In the instant case, dumping of the product from China has continued. Dumping would intensify, should the present anti dumping duty be revoked from China.

13.2. The domestic industry has continued to suffer injury and the same is likely to continue in the event of revocation of duties. If the domestic industry has not suffered continued injury, petitioner then claims that the revocation of duties would likely to lead to recurrence of injury from Chinese imports.

13.3 The domestic industry has requested for conversion of anti dumping duty from benchmark form to fixed amounts on the grounds that the costs of inputs required for production of the product under consideration have significantly increased and therefore benchmark form is not an appropriate form for the product.

F.2**13.4 Views of the exporters, importers, users & other interested parties**

1. The source of additional information has not been provided, which was given on the date of hearing.
2. Importers data is essential for the correct adjudication and the contention of domestic industry to oust the importers to make any representation should be rejected. As per Rule 23 of DGAD, this should not be done as to examine the recurrence of duty correctly.
3. TTPL does not have standing as a domestic producer.
4. There are irregularities in the data in the petition and the additional submissions made.
5. Domestic industry should provide information about the methodology of determining the benchmark price.
6. The additional data provided does not exclusively pertain to the imports of TiO2 Anatase grade.
7. The additional data provided exceeds the period of investigation and includes data for 2008-09. And so such information should be discarded.
8. Petitioners have wrongly stated that in the sunset review it is the market disruption which is sufficient to be shown even without showing the material injury.
9. All injury parameters are not completely addressed.
10. Imports have not resulted in price undercutting and so no causal link has been established. Further there has been increase in volume of imports from other countries.
11. Import price of the subject goods is higher than the domestic sales price so there is no price undercutting.
12. Kilburn Chemicals has not suffered injury.
13. TTPL has priced its goods at highly uncompetitive prices and that is why KCL has to undercut its prices.
14. TTPL has been suffering due to its own operational difficulties and not because of imports.
15. The additional data provided does not exclusively pertain to imports of TiO2 Anatase grade.
16. Analysis of injury parameters of Kilburn is not considered which shows a different picture of profits, positive capacity utilization, production, sales and market share.
17. Petitioners contended at the public hearing that the importers should be disallowed from making written submissions. Then the said contention is equally applicable on the petitioners who provide new data on import volumes and value during the public hearing.
18. Since the prices have gone up by 17%, there is no price suppression.
19. The additional data on excess capacity of Chinese exporters does not pertain to production capacity of TiO2 Anatase grade exclusively.
20. The CAG Report for the year ending March 2007 has concluded on the decline witnessed by Travancore Titanium Products Limited as lack of strategic management.

F.3 Examination by the Authority

14. For the purpose of assessing present state of injury, the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any. The Authority noted the concern of the parties

about analysis of injury parameter and has addressed the same by undertaking analysis of all mandatory injury parameters.

14.1 Comments to the Disclosure statement by Importers and Examination by the Authority.

14.2 It has been noted that the importers have raised the points in respect of sales volume taken in respect of Kilburn, installed capacity of TTPL, about other injury parameters and disclosure of NIP etc. The authority has examined all these issues and notes that the information in respect of Kilburn has been adopted based on the information contained in their financial statements as provided by the petitioners.

14.3 In respect of the Installed capacity, the authority notes that it was earlier contended by the importers that the petitioner has an installed capacity of only 15,000 MT and not 25,000 MT as claimed in the petition. On examination and verification, the authority has considered the capacity as 15000 MT. The authority notes that had 25000 MT considered as Installed capacity, the injury would be further aggravated. In respect of the Production figures provided vide Para 18.1 of the disclosure statement and those provided in Proforma IV-A Part II of the petition, it is noted that the figures as reported in the disclosure statement are as verified by the authority. Moreover, the impact arising out of such difference in production has not been pointed out by the importers.

14.4 It has been further submitted that the DGAD has erred by stating that the landed price of imports is significantly lower than the selling price, the landed price of imports is significantly lower than the NIP and the increase in cost of sales has not been proportionately matched with the increase in selling price. It may be stated that in respect of import prices, the authority has made the determination based on – (a) verified information; (b) selling price of domestic industry. The CIF import price in the period of investigation was Rs.49.96 /Kg, considering 10% Customs Duty, the landed price of imports comes to Rs.55/Kg. The weighted average landed price based on the information submitted by the importers is Rs 60.60 per kg.

14.5 It has been stated that the veracity of the surplus capacity figures for Chinese exporters must be reassessed in the light of misstatements made by the petitioner. It is noted that the authority has proceeded based on available information. Moreover, the importers have provided no evidence showing possible decline of such capacities. In respect of inflated and uncompetitive raw material cost, the authority notes that the input prices of TTPL are comparable or even lower than international prices.

14.6 In respect of the disclosure of the absolute figures for the various constituents employed to arrive at the NIP, the authority notes that the breakdown of non-injurious price is based on business sensitive confidential information and therefore cannot be disclosed to other parties. This is a consistent practice.

15. (A) VOLUME EFFECT: Volume effect of dumped imports and impact on domestic industry:

The effects of volume of dumped imports from subject country have been examined as follows:

15.1 Demand and Market shares

The Authority has determined demand or apparent consumption of the product in the Country as the sum of domestic sales of the Indian Producers and imports from all sources. The demand so assessed can be seen in the table below. It is seen that demand of the product in the country, after showing increasing trend till 2006-07, shows marginal decline in the POI from the base year.

Figures in MT

Demand	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Sales of Domestic industry	14396	12077	12468	11020
Sales of Kilburn (supporter)	8490	9077	7389	9166
Imports - Subject Countries	6059	9210	9799	5372
Imports - Other Countries	3990	3647	5915	5749
Total Demand	32936	34011	35571	31307

15.2 Import Volume & market share

With regard to volume of the dumped imports, the designated authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India. The Authority considers that in a sunset review case, this is required to be applied on mutatis mutandis basis in the present case.

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Imports from China (MT)	6,059	9,210	9,799	5,372
Share of Imports in relation to				
➤ Total imports in India	60.29	71.63	62.36	48.31
➤ Demand in India	18.40	27.08	27.55	17.16
➤ Production of Domestic Industry	35.92	60.19	74.22	40.69

With regard to the argument that imports have declined in the current period of investigation, the Authority notes that the present investigation is a sunset review investigation. Increase in imports is not a necessary pre-condition for extension of anti dumping duties. In fact, anti dumping duties can be extended even in those situations where there are no exports of the product. The domestic industry provided news items showing that Chinese Titanium Dioxide industry was directed to suspend production in view of Olympics, considering that the production process relating to the product is considered a highly polluting process.

15.3 The petitioner has claimed that significant volume of imports in the presence of anti dumping duties and the price at which these imports have been made clearly establishes that the imports have been made without payment of anti dumping duties. Given the significant volume of imports in spite of existing anti dumping duties, it is evident that the volume of imports would at the least increase further in the absence of anti dumping duties. The Authority observes that there have been significant imports in spite of existing anti dumping duties.

16. Production, capacity and capacity utilization

16.1 Actual production, capacity and capacity utilization of the domestic industry have declined as shown in the following table-

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Capacity (MT)	15,000	15,000	15,000	15,000
Production (MT)	16,868	15,300	13,203	11,517
Capacity utilization (%)	112.45	102.00	88.02	76.78

16.2 The Authority observes that there has been consistent decline in production from 2005-06 due to continued presence of dumped import in the market. Consequently, capacity utilization has also declined.

16.3 It is noted that whereas the domestic industry was earlier able to utilize its full capacity (and in fact achieved capacity utilization far higher than installed capacity), the capacity utilization has suffered and declined significantly. The fact that the domestic industry has achieved capacity utilization far in excess of 100% clearly shows technical capability of the domestic industry. The commercial viability due to dumping is the sole injury to the domestic industry. The impact of dumping has been so significant that the domestic industry has been forced to reduce its production.

17. Sales:

17.1 Sales volumes of domestic industry are given in the following table: -

	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Domestic Sales (MT)	14396	12077	12468	11020
Indexed	100	84	87	77

17.2 The sales volume of the domestic industry shows a pattern similar to that of production. Sales of the domestic industry declined significantly over the current injury period.

18. Market share

18.1 Share of the domestic industry and various other parties in demand in India was as under:

Market Share in Demand(%)	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Sales of Domestic industry	43.71	35.51	35.05	35.20
Sales of Kilburn- supporter	25.78	26.69	20.77	29.28
Imports - China	18.40	27.08	27.55	17.16
Imports - Other Countries	12.11	10.72	16.63	18.36
Total	100	100	100	100

It is observed that the current anti dumping measures has not been sufficient to deter the Chinese exporters from dumping the subject goods in India. The imports from China continue to hold significant share in the market in spite of anti dumping duty being in force.

18.2 The petitioner has submitted that it has been general experience and expectation that volume and share of imports would decline significantly with the imposition of anti dumping duties – access to dumped imports being sole cause of significant increase in imports in the past, more so in a situation where the domestic industry is in a position to cater to the demand. However, in the instant case, even when the anti dumping duties remained in effect, the volume of imports has not got impacted because of existing anti dumping duties. The domestic industry had hoped to regain its market share after imposition of anti dumping duties. However, continued presence of dumped imports prevented domestic industry in increasing its sales and market share.

18.3 The authority observes that during the injury period, the share of domestic industry has gone down by 8.51%, 3.5% of which has been taken over by another domestic producer namely M/s Kilburn. The imports from other countries have gone up by 6.25% and imports from China have gone down by 1.25%, thus the remaining 5% have been taken over by other countries. Thus, volume effect is not there. However, in respect of decline in imports during POI from the previous years, the domestic industry has provided news items showing that Chinese Titanium Dioxide industry was directed to suspend production in view of Olympics, considering that the production process relating to the product is considered a highly polluting process.

19. **B) Price Effect of the dumped imports on the Domestic Industry**

i) The impact on the prices of the domestic industry on account of imports from the subject country have been examined with reference to price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the cost of production, net sales realization (NSR) and the non-injurious price (NIP) of the domestic industry (worked out on the basis of the costing information of the domestic industry) have been compared with landed value of imports from the subject country for Anatase grade.

ii) A comparison for subject goods during the period of investigation was made between the landed value of dumped imports and the domestic selling price in the domestic market. In determining the net sales realization of the domestic industry, taxes, rebates, discounts and commission offered by the domestic industry have been adjusted. The price underselling is an important indicator of assessment of injury; thus, the Authority has worked out a non-injurious price and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been evaluated for the domestic industry by appropriately considering the cost of production for the product under consideration during the POI. The position is as follows:

Price undercutting	Rs/MT
NSR	***
Landed Price	***
Price undercutting Rs	***
Price undercutting %	33.16
Price underselling	
NIP	***
Landed Price	***
Price underselling Rs	***
Price underselling %	34.11

iii) It is found that (a) landed price of imports are significantly below the selling price of the domestic industry, thus resulting in price undercutting; (b) the selling price of the domestic industry are substantially below the non-injurious price of the domestic industry, thus resulting in price underselling, (c) whereas cost of production increased over the injury period, the selling prices did not increase in the same proportion. The imports were therefore suppressing the prices of the domestic industry in the market.

iv) The authority observes that the landed price from China PR during the POI and the injury period was substantially lower than the prices from other countries.

CIF Price		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
China P.R.	Rs./Mt	47798	48408	52075	49968
Trend	Indexed	100	101	109	105
Other Countries	Rs./Mt	93198	107576	113767	89856
Trend	Indexed	100	115	122	96

With regard to imports from other countries, it is observed that imports from other countries have increased. It is however, also observed that import prices from other countries are higher than the import price from China and selling price of the domestic industry. Since imports from other countries are not undercutting the prices of domestic industry, it cannot be said that imports from other countries are leading to adverse price effect. Thus, the authority observes that the price effect of dumped imports from China is quite significant.

20. Examination of other Injury Parameters

After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier section, other economic parameters which

could indicate existence of injury to the domestic industry have been analyzed hereunder as follows:

21. **Profit/loss, return on investment and cash flow** – The return on investment, profit/loss before and after interest, return on investment and cash profit has moved as shown in the table below:

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Profit /(Loss)					
Cost of Sales - Domestic	Rs/Mt	***	***	***	***
<i>Indexed</i>		100	119	114	135
Selling price - Domestic	Rs/Mt	***	***	***	***
<i>Indexed</i>		100	100	104	117
Profit/(Loss) - Domestic	Rs/Mt	***	(***)	(***)	(***)
<i>Indexed</i>		100	(461)	(175)	(398)
Profit/(Loss) - Domestic	Rs/Lacs	***	(***)	(***)	(***)
<i>Indexed</i>		100	(387)	(152)	(305)
Profit before Interest and Taxes Domestic	Rs/Lacs	***	(***)	(***)	(***)
<i>Indexed</i>		100	(374)	(139)	(295)
Cash Profit	Rs/Lacs	***	(***)	(***)	(***)
<i>Indexed</i>		100	(221)	(71)	(168)
Return on Investment					
Gross Fixed Assets	Rs/Lacs	***	***	***	***
Net Fixed Assets	Rs/Lacs	***	***	***	***
Working Capital	Rs/Lacs	***	***	***	***
Total Capital Employed(on GFA basis)	Rs/Lacs	***	***	***	***
Total Capital Employed(on NFA basis)	Rs/Lacs	***	***	***	***
Capital Employed for Domestic (GFA basis)	Rs/Lacs	***	***	***	***
Capital Employed for Domestic (NFA basis)	Rs/Lacs	***	***	***	***

Return on Capital Employed-GFA	%	***	(***)	(***)	(***)
Trend (Indexed 2004-05=100)	Indexed	100	(671)	(209)	(310)
Return on Capital Employed-NFA	%	***	(***)	(***)	(***)
Trend (Indexed 2004-05=100)	Indexed	100	(850)	(499)	(376)

The data shows that the cost of sales increased by 35% whereas selling price increased only by 17% in POI as compared to base year. As a result, profit per MT declined significantly in POI as compared to base year.

21.1 The profit (PBIT) declined significantly in POI as compared to base year. Domestic industry was in losses in POI. PBIT which was positive in the base year was significantly negative in POI.

21.2 In order to analyze the impact of dumped imports on cash flow, the Authority has considered the trends in cash profits. The cash profit has been determined by addition of amount of depreciation to the profit (profit before tax). The trend shows the same trend as of PBIT. Cash profit has been converted into cash loss.

21.3 It is also observed that domestic industry earned profits in 2004-05 after imposition of anti dumping duties. However, the domestic industry has suffered significant financial losses from 2005-06 onwards. In fact, so significant have been the financial losses that the domestic industry has not been able to recover even interest and depreciation expenses.

22. Inventories:

Inventories with the domestic industry have been as under:

	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Average stock	MT	***	***	***	***
Indexed		100	84	35	44

22.1 The inventories with the domestic industry are indicative of its inability to sell the subject goods even at a loss. Even though the inventories declined, it is relevant to note that even these levels of inventories are too high.

23. Employment, wages and productivity

		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Employment	Nos.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	96.88	88.34	76.19

23.1 It is observed that employment over the period has declined. The domestic industry has no option but to reduce employment in view of significant injury being faced for past 10 years. The domestic industry is somehow trying to survive with reduction in employment, through use of overtime wages, which is optimizing its overall situation.

		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Productivity per day	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	93.38	85.88	68.67
Productivity per Employee	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	96.39	97.22	90.13

23.2 Productivity has declined over the period in view of decline in production. However, even if productivity is considered at the same rate as in the past, it is evident that the domestic industry would have still suffered injury. Wages paid by the domestic industry declined over the injury period, in spite of which the domestic industry is suffering significant losses. Had the wages paid been the same, the domestic industry would have suffered significantly higher financial losses.

24. Growth

Growth of the domestic industry is negative in respect of volume as well as price parameters such as sales volume, production, capacity utilization, profitability, return on investment and cash flow.

25. **Dumping margin** – The Authority notes that the dumping margin determined in the previous investigation was found quite significant. The dumping margin determined in the application shows continued significant dumping by Chinese producers.

26. **Ability to raise capital investments** – The Authority notes the following submissions of the petitioner in this regard: -

The domestic industry is required to bring in pollution control measures. Further, research & development is an integral part of every industry. The current product is no exception. However, given significant financial losses, when running of the plant itself is so difficult that the company has been forced to request the Govt. of Kerala or other public sector companies to lend them support with huge funds, investing in R&D or pollution control has become an extremely difficult task. It is clarified that the company has yet not adopted expensive pollution control but is in the process of doing so; however, the difficulty of the company is that it is facing competition from

those companies who are probably not required to invest in pollution control measures.

It is noted that continued dumping has very adversely impacted the ability of the company to raise capital.

27. Conclusion on injury

27.1 It has been heavily argued by the opposing parties that –

- (a) Another producer M/s Kilburn Chemicals has not suffered injury;
- (b) Kilburn Chemicals has caused injury to the petitioner;
- (c) Imports from third countries caused injury to the petitioner.

27.2 From the information made available by the interested parties in this regard, the Authority observes the following –

- (a) Even when production & sales of the company have increased, the capacity utilization of Kilburn is sub-optimal.
- (b) The profitability of Kilburn has significantly declined as may be seen from the table below (since Kilburn Chemicals has not responded to the Authority, the present observations are based on evidence provided by the opposing parties);
- (c) From the annual reports of Kilburn Chemicals, the summarized position of the company is as follows:

		2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
Sales	MT	8490	9077	7389	9166
Profit before tax	Rs.	72,500,000	9,107,449	9,159,738	3,567,664
Profit after tax	Rs.	34,900,000	8,458,264	6,954,264	1,973,921
Dividend	%	18%	20%	20%	5%
Profit per unit					
Profit before tax	Rs./MT	8,539	1,003	1,240	389
Profit after tax	Rs./MT	4,111	932	941	215

d) It is seen from the above that even if it is admitted that Kilburn has gained volumes, it is evident that the performance of the company has significantly deteriorated in terms of profits, return on investment and cash flow. In fact, assuming that Kilburn constituted domestic industry, it is seen that the conclusion drawn by the Authority would have remained the same i.e. the domestic industry suffered continued injury.

27.3 Interested parties have pointed out about operational difficulties and significantly high unnecessary investment in pollution control measures by the petitioner. The petitioner, however, confirmed not having adopted the pollution control measures of the magnitude as is

known to the opposing parties. The domestic industry argued that they have planned to make very small investments. Even such small investment is becoming difficult in view of significant adverse performance of the company due to dumping. The domestic industry claimed that they are not able to raise capital for investment due to dumping and this may cause irreparable damage to the domestic industry.

27.4 Imports of product under consideration remained significant over the current injury period in absolute terms. The increase in imports was in spite of existing anti dumping duties and appears to be because of increase in the costs leading to increase in the import prices and consequently benchmark becoming less effective in ensuring imports at undumped /non injurious prices. Imports remained significant in relation to production and consumption in India. With regard to price effect, it is observed that imports were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market and were preventing price increases that would have otherwise occurred in the absence of imports. As regards consequent impact of dumped imports on the domestic industry, performance of the domestic industry deteriorated in terms of production, capacity utilization, market share, sales volumes, selling price, profits, cash profit and return on investments. Imports were suppressing domestic prices. The Authority, therefore, concludes that the domestic industry has suffered continued material injury.

28. CAUSAL LINK

28.1 Likelihood of continuation or recurrence of injury

The present investigation is a review investigation and the Designated Authority is required to examine whether revocation of duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury. In this case, though declining, as there are continued dumped imports, the Designated Authority is required to examine whether revocation of duty is likely to lead to continued dumping of the product. Though in a declining trend, the exporters and producers from the subject country are exporting subject goods to India for the past several years. The current dumping margin is very significant. In the previously concluded investigation also dumping margin was significant. In such a situation, there is no reason to believe that the dumping will not intensify with the revocation of duty. Although from the data in the preceding paragraphs, it is evident that the volume of imports from the subject country has reduced much as compared to the base year. However as noted above, imports from China are significantly undercutting the prices of domestic industry. The argument of interested parties to such an extent is factually incorrect. Further, the fact that imports have declined from China does not establish that there is no causal link between continued dumping and continued injury to the domestic industry. It, at best, establishes that the decline in sales volumes of the domestic industry cannot be attributed to dumped imports. Even on this factor, the domestic industry argued that had the Chinese producers not resorted to dumping, the domestic industry would have had enough market to sell the material. This, according to the domestic industry, clearly establishes adverse impact. Furthermore, and more importantly, in any case, significant difference between landed price of import on one side and selling price & non injurious price of domestic industry on the other side clearly establishes that injury would intensify in the event of revocation of anti dumping duties. The domestic industry has referred to the decisions of the CESTAT in the following cases, which has also been considered in the present disclosure statement.

- i) Kalyani Steel Ltd 2006(203) ELT 418.
- ii) Indian Graphite Manufactures association 2006(199) ELT 722

iii) Forum of Acrylic Fibre manufacturers 2006(202) ELT 257

iv) Jindal Steels Ltd 2006(204) ELT 267

Considering the huge production of the subject goods in China and their export orientation and the increasing demand for the subject goods in India, in all likelihood any reduction or revocation of the anti-dumping duty may lead to spurt in the dumped imports injuring the domestic industry.

29. Likelihood of Dumping

To examine the likelihood of dumping in a sunset review investigation, the Authority applies the same methodology and the procedure as are applied in original investigations. The dumping margin is also recalculated for the POI.

29.1 The subject goods are being exported at very low and dumped prices. The Chinese exporters have continued dumping even after the imposition of anti-dumping duties. Further, the volume of imports is significant in spite of present duties. Thus, the present situation is clearly suggestive that (a) the dumping would continue in the event of revocation of anti dumping duty; (b) the volumes would further increase, once the present anti dumping duties are revoked. Thus dumping is likely to continue in significantly increased proportion in the event of revocation of anti dumping duties. There are no changes in the parameters/circumstances prevailing at the time of original investigation as well as at present. It is evident from above that dumping margins are not only more than de-minimus but also significantly high. The circumstances, which were prevalent at the time of original investigations, are very much in existence even in the present period. Considering the volume of imports reported in the injury period of previous case and the volume of imports reported in the current injury period in absolute terms and in relation to production & consumption in India, the Authority is of the view that revocation of anti dumping duties is likely to lead to injury to the domestic industry from dumped Chinese imports.

29.2 Following are some of the considerations, which reflect that the dumping would occur rather at aggravated level in the event anti-dumping duties are revoked or not extended for the next five years.

a. Exports to other Countries

Chinese exporters are exporting the subject goods in the third countries in significant volumes. It is evident that in the case of revocation of anti dumping duty, dumping of Chinese material into the Country would intensify.

The position of top twenty destinations of Chinese exports (quantity in Kg) of Titanium Dioxide (282300) is as follows:

	Top 20 Countries					
Rank	Country -	Apr 04-Mar 05	Apr 05-Mar 06	Apr 06-Mar 07	Apr 07-Mar 08	Apr 08-Mar 09
0	--World-- -	2,83,97,739	2,87,57,488	3,48,64,937	3,81,02,954	2,24,41,538
1	United States -	22,42,077	14,41,620	13,75,675	19,94,998	33,13,245

2	Japan -	41,77,155	25,80,738	35,42,242	45,02,728	24,48,249
3	India -	14,89,000	30,32,175	68,65,250	44,76,350	21,54,150
4	Spain -	3,40,000	15,85,000	15,49,000	68,45,500	20,97,525
5	Korea, South -	33,34,725	35,87,100	45,61,140	44,14,852	15,44,998
6	Thailand -	18,05,000	17,57,500	27,44,840	22,57,000	15,23,345
7	Indonesia -	3,26,800	9,40,000	16,46,500	13,33,500	11,98,625
8	Hong Kong -	81,67,810	64,12,300	24,02,000	29,30,676	11,59,550
9	Vietnam -	3,97,600	7,73,925	13,48,110	11,57,530	10,80,520
10	Belgium -	1,38,000	4,40,000	6,10,800	4,98,100	6,93,600
11	Turkey -	65,000	64,000	6,87,200	5,21,775	6,89,000
12	Netherlands -	59,500	5,24,000	2,23,725	7,08,000	5,11,000
13	France -	4,14,000	3,94,100	5,10,300	6,01,850	4,66,250
14	Taiwan -	8,40,960	8,27,175	9,24,610	5,92,975	4,55,005
15	Iran -	1,67,000	3,89,000	5,81,000	5,53,300	4,11,020
16	Malaysia -	4,29,000	5,84,000	6,77,000	5,55,510	4,02,425
17	Italy -	22,000	1,20,075	7,82,000	14,71,300	3,75,800
18	Brazil -	3,00,000	0	91,000	3,22,000	3,50,000
19	Australia -	60,000	92,000	60,000	3,18,000	2,99,000
20	Bangladesh -	42,000	1,29,500	1,72,000	1,04,000	2,18,000

Source of data: China Customs

Pricing trend

The prices to third countries expressed in Rs. Term per kg (US\$=Rs 40.75 for POI) is as follows:

Rank	Country	Apr 04- Mar 05	Apr 05- Mar 06	Apr 06- Mar 07	Apr 07- Mar 08	Apr 08- Mar 09
0	--World--	-				
1	United States	79.46	59.56	92.77	107.41	224.12
2	Japan	218.16	148.59	258.41	286.60	210.11
3	India	59.43	124.73	305.47	237.52	126.54
4	Spain	13.01	54.29	60.62	332.10	149.05
5	Korea, South	143.31	158.68	216.16	253.36	106.50
6	Thailand	72.88	75.35	128.69	130.72	101.59
7	Indonesia	13.36	40.75	74.04	76.33	76.23
8	Hong Kong	281.95	255.13	110.92	154.71	78.93
9	Vietnam	12.12	26.10	58.63	65.80	74.15
10	Belgium	5.77	19.38	31.29	29.37	45.26
11	Turkey	2.48	2.93	31.31	25.55	48.24
12	Netherlands	2.55	18.77	11.39	37.65	44.29
13	France	15.26	15.41	23.08	31.04	35.74
14	Taiwan	31.96	40.47	46.53	36.92	27.51
15	Iran	7.24	16.22	26.11	30.73	25.04
16	Malaysia	17.49	25.74	30.62	32.14	28.58
17	Italy	0.64	4.68	31.41	71.11	19.81
18	Brazil	14.67	-	4.20	19.91	22.95
19	Australia	2.59	4.39	2.67	16.90	21.84
20	Bangladesh	1.69	5.18	7.78	6.66	13.76

Source of data: China Customs

b. Capacities with Chinese producers

The capacities created by producers in China are significantly high. There are more than 100 producers of Titanium Dioxide in China. Huge volume of exports being made by the Chinese producers in third country markets makes it evident that the volume of imports into India would increase significantly in the event of revocation of anti-dumping duty. The petitioners could collect information with respect to the some of the producers of the subject goods in China, which shows the following position –

S.N.	Name of the Company	Capacity/Production(MT)
1	Jiangsu Hongyuan Pharmacia P Rtical Co.,Ltd	15,000
2	Jiangsu Taibai Group Corp.	50,000
3	Shanghai Nanling Chemical Products Co., Ltd	12,000
4	Xiamen Profounder Import and Export Co., Ltd	30,000
5	Jiangsu Zhentai Chemical Co., Ltd.	50000
6	Maanshan Goldstar Chemical Industrial (Group)	2000
	Total	159,000

c). The Chinese producers are holding significant capacities, as may be seen from the information given above for some of the Chinese producers. Such being the case, there is a great possibility that revocation of duty would lead to surge in imports and severe injury to the domestic industry. Given the meagre demand of approximately 38,000-40,000 MT in India, as compared to capacity in China (more than 50,000 MT for some of the producers), it is beyond doubt that the domestic industry can be completely wiped out by the Chinese dumping, should the same be allowed.

d) The representatives of M/s. Berger Paints Ltd. and M/s. Kansai Nerolac Paints Ltd. have argued that the data on excess capacities does not pertain to production capacity of TIO₂ Anatase grade exclusively. However, the importers have not provided any information to substantiate their claim. Therefore, the Authority considers the information submitted by the domestic industry as best information available.

e) From the foregoing, it is evident that the Chinese producers have huge capacities of Titanium Dioxide and have been exporting substantial quantities to third countries. The exports are being made to India also and domestic industry is facing continuous dumping of subject goods from China. However, there is no reason or justification to believe that revocation of the duty would not lead to increased or continued dumping at large scale with consequent severe injury to the domestic industry.

30. Current Injury and causal link

30.1. Article 3.1 of the Act and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the

effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

G. Other Known factors and Causal Link

31. The Authority has examined existence of causal link between the dumped imports and injury suffered by the domestic industry in the light of the arguments of the interested parties and having regard to the Rules in this regard.

a) Effect of other known listed parameters

The Authority examined the issue of causal link and other non-attributive factors as laid down in the Rules to segregate injury, if any, caused by other factors. In this regard, the following indicative factors as laid down in the Rules have been examined.

31.1 Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

The Authority observes that although there are imports of the product under consideration from other countries during the POI but the import prices, as evident from the data at Para 19 (iv) above, were higher than the prices of domestic industry and hence are not undercutting the domestic industry's price. Thus, the authority observes that the price effect of dumped imports from China is quite significant.

(b) Trade restrictive practice and competition between the foreign and domestic producers

The Authority has not found any trade restrictive practice followed by the domestic industry and other Indian producers. The Authority observes that the subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. Further, the landed price of imports declined very significantly over the injury period. In a situation where the import prices are substantially lower than the selling prices of the Indian Producers, it cannot be concluded that the price reduction in the market were triggered by the domestic producers.

(c) Contraction of demand or Changes in the pattern of consumption

There is no contraction in the overall demand during the period under consideration. Therefore, any possible decline in demand is not a factor, which could have caused injury to the domestic industry. There is no argument by interested parties regarding the change in the pattern of consumption, nor does it appear that changes in the pattern of consumption could have inflicted the injury to the domestic industry.

(d) Export performance

Export sales of the domestic industry have declined. However, the data with respect to domestic sales has been examined separately. Therefore, decline in exports is not a possible cause of injury to the domestic industry.

Particulars	Unit	2004-05	2005-06	2006-07	POI
Exports Sales	MT	785	5,464	-	25

(e) Productivity of the Domestic Industry

Productivity of the domestic industry has declined as a result of decline in production.

(f) From the foregoing, it can be concluded that there is no evidence of injury being caused due to other factors.

(g) Overall assessment

32. The above analysis of various injury and causal link factors show that in spite of improvement in some parameters during the injury period, the performance of the domestic industry has materially deteriorated and the industry suffered injury in terms of sales volumes, capacity utilization, market share, profitability, cash flow and return on investment, while there was significant demand for the product in the domestic market. The injury suffered is material and significant. Therefore, the Authority concludes that the domestic industry has suffered continued injury and such injury has been caused significantly by price and volume effects of dumped imports from the China PR. Injury, if any, caused due to other factors is not significant.

33. Magnitude of Injury and injury margin

In a situation where the dumping continues or is likely to recur in the event of revocation of anti dumping duty and where the domestic industry continues to be injured or the injury to the domestic industry is likely to recur in the event of revocation of anti dumping duty, the anti dumping duty in force should be continued further for a period of five years. In the instant case, dumping of the product from China has continued. Dumping would intensify, should the present anti dumping duty be revoked from China.

33.1 Comments to the Disclosure statement.

a) By the Importers

33.1.1 There should be no conversion of the benchmark duty payable on imports of the PUC into fixed amount because:

- a. There is no dumping,
- b. The aim of the anti-dumping duty is to remove injury to the domestic industry, is achieved through levy of benchmark duty as well.

b) By Domestic industry

33.1.2 Definitive anti dumping duties are required to be continued on imports from the subject country and fixed form of duty may be recommended, expressed in US\$.

33.2 Examination by the authority

a) The authority notes that the investigations have shown continued imports at dumped prices and continued injury. As the landed price of the subject product does not show wide fluctuation, the authority observes that there is no necessity for imposition of definitive duties in fixed terms.

H. FINAL FINDINGS:

34. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority through the submissions of interested parties or otherwise as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis of the state of current and likely dumping and injury and likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury, the Authority concludes that:

- i) The subject goods are entering the Indian market at dumped prices and the dumping margin is substantial and above de-minimis.
- ii) The subject goods are likely to enter Indian market in increased volumes and at dumped prices, should the present measures be withdrawn.
- iii) The performance of the domestic industry has materially deteriorated and the industry suffered injury in terms of sales volumes, capacity utilization, market share, profitability, cash flow and return on investment, while there was a healthy demand for the product in the domestic market. The situation of the domestic industry continues to be fragile due to continued dumping of the subject goods from the subject country. Should the present anti dumping duties be revoked, injury to the domestic industry is likely to continue and intensify.

I Indian industry's interest and other issues

35. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practice, prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of the anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the products to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

36. The purpose of anti dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti dumping, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

37. The domestic industry has represented for conversion of present anti dumping duties from benchmark form to fixed form, expressed in US\$. The Authority notes that there were significant movements in the raw material prices over the injury period. It is therefore considered appropriate to modify the form of measure to fixed quantum of anti dumping duties expressed in US\$.

J. Recommendations

38. Having concluded that the situation of the domestic industry continues to be fragile and there is likelihood of continuation and intensification of dumping and injury on account of imports from the subject country if the duties are revoked, the Authority is of the opinion that the measure is required to be extended in respect of imports from the subject country as

recommended by the Authority vide Final Findings Notification No.14/51/2002-DGAD dated 15th March, 2004 published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-I, Section-I, on 16th March, 2004 and notified by the Central Government vide Notification No.54/2004-Customs dated 9th April, 2004.

39 Having examined the current dumping and likelihood of dumping to be imminent in case of withdrawal of the current measure in place and since none of the exporters from the subject country has cooperated and provided the required information/data, the Authority recommends continued imposition of Anti-Dumping Duty for a further period of five years on all the exporters/producers in respect of the subject goods originating in or exported from China PR as per the table below. The Anti-Dumping duty shall be equal to the difference between the amount mentioned in column no.9 of the following table and the landed value of the imported subject goods falling under chapter 28 and/or 32 of the Customs Tariff, originating or exported from the subject country as mentioned below:-

1	28 23 and/ or 32 06	Titanium Dioxide	Anatase	China PR	China	Any	Any	1735.47	Per MT	US \$
2	28 23 and/ or 32 06	Titanium Dioxide	Anatase	China PR	Any	Any	Any	1735.47	Per MT	US \$
2	28 23 and/ or 32 06	Titanium Dioxide	Anatase	Any other than China PR	China	Any	Any	1735.47	Per MT	US \$

40 An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

R. GOPALAN, Designated Authority